कैम्पस कनेक्ट
(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का समाचार बुलेटिन)
जनवरी, 2026 वर्ष : 1, अंक : 6

प्रेरणा–स्रोत :
श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्रीमान योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
डॉ. अश्विनी कुमार (कुलसचिव)
श्री दीनानाथ यादव (परीक्षा नियंत्रक)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह–सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक–मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त–प्रबन्धन
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश–272202
ईमेल :
campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट : www.suksn.edu.in

(सम्पादन–प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति–कथन

'नया' शब्द सामने आते ही मन में एक उत्साह का संचार होता है। हृदय उल्लसित सा हो उठता है। नवता में सुख है, सौन्दर्य है, आकर्षण है, आशा है, उत्साह है, विश्वास है और है शक्ति भी! नया हमें अपनी ओर खींचता है, हमारे मन को ऊर्जस्वित करता है, हृदय को उमंगायित करता है। इसलिये नववर्ष का आगमन भी हमें ऊर्जा, उन्मेष और नवोत्साह से भर जाता है। हर नया पुराना पड़ता है और हर पुराने के बाद नये के आगमन का भी नियम है। सो अगला नया साल भी हर बार आकर विगत नये साल को पुराना कर जाता है। हम विगत का मूल्यांकन करते हैं, उससे सीखते हैं, आगत के लिये तैयार होते हैं। पुनः नये संकल्प करते हैं, उनको प्राप्त करने के लिये कटिबद्ध होते हैं और वर्ष के अन्त में आकलन करते हैं कि सफलता का प्रतिशत क्या रहा!

सफलता हमारे कर्म में निहित है। न तो वह कोरे संकल्प से मिल सकती है, न केवल उत्साह से। कर्म–सचेष्ट होकर ही हम इसे प्राप्त कर सकते हैं। जितना वांछित प्रयास होगा, उतनी ही इच्छित सफलता प्राप्त होने की सम्भावना रहेगी। हमारी कर्मठता, लगन और प्रयासों की सातत्यता ही सफलता को हमारे पास लाती हैं।

जनवरी आने के साथ ही एक और नवल वर्ष हमारे जीवन में प्रवेश कर चुका है। यह हमें पुनः नयी आशाओं से सम्पन्न कर रहा है। हम अपने विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देते हैं और आशा करते हैं कि हमारा विश्वविद्यालय नये वर्ष में बहुत सी नयी उपलब्धियों को अपने साथ जोड़ते हुए वर्ष 2026 की यात्रा पूर्ण करेगा।

हमारे विद्यार्थी अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र की ही उम्मीद नहीं हैं, हमारे विश्वविद्यालय की भी आशा का केन्द्र हैं। वे हमारे भविष्य की उम्मीद हैं। विश्वविद्यालय उन्हीं के लिये है और उन्हीं से हैं। उन्हीं की सफलता में विश्वविद्यालय की सफलता निहित है। अतः हमारे सारे प्रयास उन्हीं को आगे बढ़ाने के लिये होते हैं। हमें विश्वास है कि हमारे सुयोग्य तथा कुशल शिक्षक–रूपी सारथियों के सहयोग से उनके जीवन का रथ मंगल–पथ की ओर बढ़ेगा और उन्हें उज्ज्वल भविष्य की मंजिल की ओर अग्रसर करेगा।

जनवरी माह कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। मकर संक्रान्ति का पर्व इसी माह में प्रतिवर्ष आता है जो लगभग पूरे देश में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। वसन्तपंचमी भी इस बार इसी माह में पड़ रही है। ये दोनों पर्व हमारी संस्कृति में विशेष महत्ता रखते हैं। 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है। विश्व भर में भारतीय धर्म–संस्कृति को प्रतिष्ठित कराने वाले स्वामी विवेकानन्द जी की जयन्ती प्रतिवर्ष 12 जनवरी को युवा दिवस के रूप में मनायी जाती है। यही तिथि शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष योगदान देने वाले भारत रत्न डॉ. भगवानदास जी का भी जन्मदिवस है। शिक्षा, धर्म, संस्कृति के क्षेत्र में इन महापुरुषद्वय का विशेष स्थान है। अपनी आजाद हिन्द सेना के दम पर अंग्रेजी सरकार के छक्के छुड़ा देने वाले अमर स्वतन्त्रता–सेनानी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती 23 जनवरी को पड़ती है। हम जनवरी माह में पड़ने वाली जयन्तियों से सम्बन्धित सभी महापुरुषों को सादर नमन करते हैं। साथ ही इस माह आने वाले समस्त पर्वोत्सवों के लिये सभी को अपनी तथा विश्वविद्यालय की ओर से इस भाव के साथ हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं कि–

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।

–कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा, अहिंसा, प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति–पारावार,
ज्ञान का आलोक, मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा–प्रीति, गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन, परम निर्मल, पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का, आनन्द का, आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था, तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा, महाकरुणा, शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय, ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

फिर आया गणतंत्र

हमारा फिर आया गणतंत्र!
छब्बीस जनवरी के दिन पावन,
पाया संविधान मनभावन।
छोड़ विदेशी शासन हमने,
अपनाया निज तन्त्र!
थे अतीत में विश्वगुरू हम,
फिर से वही दिखा देंगे दम।
दृढ़ संकल्प–शक्ति का उर में,
धारेंगे हम यंत्र!
नहीं थकेंगे, नहीं रुकेंगे,
उन्नति–पथ पर बढ़े चलेंगे।
नहीं रोक पायेगा हमको,
कोई कुटिल–कुमंत्र!
मन में भाव रखेंगे अच्छे,
होंगे देशभक्त हम सच्चे।
गलत सोच का खुद को, ना
होने देंगे परतंत्र!
देश हमारा, हम हैं इसके–
भाव यही हो उर में सबके।
नहीं देश के प्रति कोई
होने देंगे षड्यंत्र!
हो सवार परिश्रम के रथ पर,
बढ़े चलेंगे उन्नति–पथ पर।
लक्ष्य–प्राप्ति तक ना रुकने का,
अपना लेंगे मन्त्र!
गुण विकसित हों हममें अच्छे,
उड़ें दुर्गुणों के परखच्चे।
ऐसा निर्मित अभ्यंतर में,
कर लेंगे संयंत्र।
यही समय है, सही समय है,
कर लो इसमें प्राप्त विजय है।
है भविष्य गढ़ने का यह ही,
सीधा–सरल सुमंत्र!

–पराया

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में असम स्थापना दिवस उत्सवपूर्वक संपन्न

उत्तर प्रदेश शासन एवं राजभवन के निर्देशों के क्रम में आज सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में असम स्थापना दिवस समारोह उत्सवपूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने की। अपने संबोधन में कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि असम भारत की एकता, सांस्कृतिक विरासत, भौगोलिक मजबूती और आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण स्तंभ है। उन्होंने ब्रह्मपुत्र घाटी की प्राकृतिक संपदा, चाय उद्योग, हस्तशिल्प, लोककलाओं, पारंपरिक उत्पादों और असम की अद्भुत बायोडायवर्सिटी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि असम ने भारत की

पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक धरोहर को अत्यंत समृद्ध बनाया है।

कुलपति ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि विश्व के सबसे बड़े नदी द्वीप माजुली का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व अद्वितीय है, जिसे वर्तमान में पर्यावरणीय चुनौतियों से संरक्षण की आवश्यकता है। कुलपति ने पद्मश्री वन पुरुष जाधव "मोलाई" पायेंग के अद्भुत योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि तीस मिलियन से अधिक पौधे लगाकर उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक व्यक्ति भी प्रकृति संरक्षण की महान मिसाल बन सकता है।

कुलपति प्रो कविता शाह ने कहा कि भारत के पूर्वोत्तर के सात राज्य, जिन्हें सेवन सिस्टर्स कहा जाता है; वे देश की सांस्कृतिक विविधता, जनजातीय परंपराओं और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक हैं। उन्होंने बताया कि इन राज्यों को शेष भारत से जोड़ने वाला मुख्य मार्ग सिलीगुड़ी गलियारा अत्यंत सामरिक और राष्ट्रीय महत्व का क्षेत्र है। यह छोटा–सा भौगोलिक क्षेत्र भारत की सुरक्षा, व्यापार, आंतरिक संपर्क और सामरिक समेकन के लिए जीवनरेखा के समान है।

कुलपति ने कहा कि आवमाजित असम के समय संपूर्ण पूर्वोत्तर की प्रशासनिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक धुरी असम ही था। असम को समझे बिना पूर्वोत्तर को समझना संभव नहीं। कुलपति ने असम की आर्थिक प्रगति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि असम की अर्थव्यवस्था लगातार प्रगति कर रही है। भारत की कुल G.D.P. में असम का योगदान लगभग 1.8–1.9% है। उन्होंने कहा कि भले ही यह प्रतिशत कम दिखे, लेकिन असम का भौगोलिक महत्व, प्राकृतिक संसाधन, उद्योग, चाय–उत्पादन, जैव विविधता, पर्यटन, हथकरघा एवं हस्तशिल्प भारत के विकास को नई दिशा दे रहे हैं।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की विधि संकाय की प्रोफेसर डॉ. बिपाशा गोस्वामी, जिनका पारिवारिक संबंध असम से है और जिनके परिवार ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अनुकरणीय योगदान दिया, ने कहा कि असम प्राचीन काल से भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र रहा है।

प्रोफेसर बिपाशा दास ने बताया कि हर्षवर्धन के काल से 12वीं सदी तक असम अपनी राजनीतिक शक्ति, सांस्कृतिक एकता, सामाजिक समरसता और स्वतंत्रता के गौरवशाली इतिहास के लिए जाना जाता था। मुगलों को कई बार पराजित कर असम के वीरों ने यह सिद्ध किया कि यह क्षेत्र सदैव अपनी स्वतंत्रता और अस्मिता के लिए लड़ता रहा। उन्होंने असम की वन्यजीव संपदा, संगीत–नृत्य परंपरा, बिहू, संस्कृत–शिक्षा केंद्रों और धार्मिक–आध्यात्मिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि असम भारत की सांस्कृतिक चेतना को निरंतर ऊर्जा प्रदान करता रहा है।

इससे पूर्व असम स्थापना दिवस उत्सव के अवसर पर जवाहर नवोदय विद्यालय, बांसी के बच्चों द्वारा प्रस्तुत बिहू नृत्य, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा असम समूह लोकनृत्य मनमोहक प्रस्तुतियां दी गईं। वर्चुअल टूर कार्यक्रम के अंतर्गत उपस्थित श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत असम की संस्कृति, जीव–विविधता, काजीरंगा व मानस नेशनल पार्क, लोकपरंपराओं और आध्यात्मिक धरोहर पर आधारित डॉक्यूमेंट्री विशेष आकर्षण रहे। डॉ. भूपेन हजारिका के प्रसिद्ध गीत "दिल हुम–हुम करे" की प्रस्तुति ने कार्यक्रम में भावनात्मक और राष्ट्रीय एकता का संदेश भरा।

असम दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय में रंगोली प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गईं, जिनमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ रेनू त्रिपाठी ने किया तथा आभार–ज्ञापन अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. सौरव, प्रो. प्रकृति राय, प्रो. हरीश शर्मा सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, शिक्षक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

असम राज्य स्थापना दिवस पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में भव्य प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का सफल आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में असम राज्य स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर दिनांक 01 दिसंबर 2025, दिन सोमवार को प्रो० नीता यादव, अधिष्ठाता कला संकाय की अध्यक्षता में एक उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम वाणिज्य संकाय के बी०बी०ए० विभाग के डॉ. नीरज सिंह, तथा समाजशास्त्र विभाग के डॉ. मयंक कुशवाहा के संयुक्त निर्देशन में आयोजित किया गया, जिसने विश्वविद्यालय परिसर में एक उत्साहपूर्ण और शैक्षणिक वातावरण का सृजन किया। कार्यक्रम के अंतर्गत असम राज्य से संबंधित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम के इतिहास, संस्कृति, लोकपरंपराओं, साहित्य, भूगोल, राजनीति तथा सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं के प्रति जागरूक करना था।

उत्साह, तैयारी व प्रतिस्पर्धात्मक भावना के साथ बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। प्रश्नोत्तरी के प्रत्येक चरण में प्रतिभागियों ने अपनी ज्ञान–क्षमता, तर्कशक्ति और तत्परता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों का जोश, जिज्ञासा और सीखने की उत्कंठा देखते ही बनती थी, जिससे समूचे कार्यक्रम में एक गतिशील ऊर्जा का संचार हुआ। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का निरीक्षण बी.बी.ए. विभाग के अध्यक्ष डॉ अखिलेश दीक्षित ने किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में कुल 67 विद्यार्थी अलग–अलग कक्षाओं से सम्मिलित हुए, जिनमें से प्रथम स्थान

पर अनुष्का शुक्ला, द्वितीय स्थान पर अरशद कमल एवं हिमांशु अग्रहरि तथा तृतीय स्थान पर आशीष यादव, इमराना खातून, रेशमा, साहफहद अहमद, एवं अंचल गुप्ता रहे।

कार्यक्रम के अंत में माननीय कुलपति प्रो० कविता शाह जी ने प्रतिभागियों को उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि इस प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के व्यतिव–विकास तथा ज्ञानवर्धन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ और उपस्थित सभी विद्यार्थियों व शिक्षकों ने इसकी सराहना की। इस अवसर पर डॉ अंबुज श्रीवास्तव, डॉ. निधी श्रीवास्तव एवं निकिता सिंह इत्यादि शिक्षक–शिक्षिका उपस्थित रहे।

संस्कृत विभाग द्वारा मनाई गई गीता–जयंती

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा दिनांक 1 दिसंबर 2025 को गीता जयंती मनाई गई। हिंदू पंचांग के अनुसार मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को गीता जयंती प्रत्येक वर्ष भारत वर्ष में मनाई जाती है। सनातन परंपरा में मार्गशीर्ष या फिर कहें अगहन महीने के शुक्लपक्ष की एकादशी का बहुत ज्यादा महत्व माना गया है, क्योंकि यह तिथि न सिर्फ भगवान श्रीविष्णु के लिए रखे जाने वाले मोक्षदा एकादशी व्रत के लिए, बल्कि

गीता जयंती के लिए भी जानी जाती है। हिंदू मान्यता के अनुसार इसी दिन पूर्णावतार भगवान श्रीकृष्ण ने युद्ध के मैदान में अर्जुन को गीता के अनमोल वचन सुनाए थे। यानि, इसी दिन हिंदू धर्म में अत्यंत ही पवित्र, पूजनीय और अनुकरणीय माने जाने वाले ग्रन्थ 'श्रीमद्भगवद्गीता' का जन्म हुआ था।

हिंदू धर्म के सबसे पवित्र ग्रंथ गीता के श्लोक आज 21वीं सदी में भी लोगों को जीवन की सही राह दिखाने का काम करते हैं। इसमें धर्म के साथ कर्म का मर्म समाहित है। सही मायने में कहा जाए तो यह कर्म, भक्ति और ज्ञान का संगम है, जिसमें डुबकी लगाने वाले व्यक्ति को जीवन में जरूर सफलता मिलती है। भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा कहे गये गीता के अनमोल वचन व्यक्ति को कठिन समय में जीवन की सही राह दिखाने का काम करते हैं। गीता बताती है कि किस तरह कठिन से कठिन समय में भी कर्म करते हुए धर्म का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। सही अर्थ में देखा जाए तो श्रीमद्भगवद गीता में जीवन की हर समस्या का समाधान मिलता है।

इस अवसर पर संस्कृत विभाग के प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ धर्मेंद्र कुमार ने गीता के 18 अध्यायों का सार छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि गीता में ऐसे बहुत सारे दार्शनिक श्लोक हैं, जो मानव कल्याण के लिए परम आवश्यक हैं। हमें अपने दैनिक जीवन में इन श्लोकों के भाव को आत्मसात कर लोक–कल्याण की भावना को विकसित करना चाहिए। अतिथि शिक्षिका डॉ० सुजाता ने गीता के अनुष्टुप् एवं उपजाति छन्दों के श्लोकों का मधुर लय में पाठ किया।

इस अवसर पर बी.ए. के छात्र कुशल त्रिपाठी, सानिया अंसारी, प्रेमलता, सपना, आशीष, रिद्धि एवं एम. ए. की छात्रा कल्पना द्वारा भगवद्गीता के महत्त्वपूर्ण श्लोकों का वाचन किया गया। कार्यक्रम में संस्कृत विभाग के समस्त शिक्षकगण और छात्र उपस्थित रहे। अतिथि प्रवक्ता सुश्री ममता ने द्वितीय अध्याय का महत्व बताते हुए धन्यवाद–ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन अतिथि प्रवक्ता आनंद कुमार पासवान ने किया।

कुलपति द्वारा परीक्षा निरीक्षण

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के परिसर स्थित परीक्षा केंद्र पर आज कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने प्रातःकालीन सत्र में आवश्यक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने केंद्र अध्यक्ष डॉ. कौशलेंद्र चतुर्वेदी एवं सह–केंद्र अध्यक्ष डॉ. संतोष कुमार सिंह को सुगम, व्यवस्थित एवं निष्पक्ष परीक्षा संचालन हेतु आवश्यक निर्देश प्रदान किए।

कुलपति प्रो. शाह ने कहा कि परीक्षा विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है, इसलिए परीक्षाओं के समय प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर सकारात्मक, शांत एवं सहयोगपूर्ण वातावरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों की आवश्यक सुविधाएँ– जैसे स्वच्छता, उचित प्रकाश, पेयजल एवं विद्युत व्यवस्था पूरी तरह से उपलब्ध कराई जाएँ। उन्होंने यह भी कहा कि

उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि परीक्षा के दिनों में घर का वातावरण सकारात्मक एवं ऊर्जा से भरपूर बनाएँ, जो विद्यार्थियों के स्वस्थ मन, विषय ज्ञान एवं अभिव्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही परीक्षार्थियों के स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। विज्ञप्ति के माध्यम से प्रो. शाह ने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि परीक्षा के दौरान दबाव और बदलते मौसम को देखते हुए संतुलित दिनचर्या, उचित आराम एवं नियंत्रित खान–पान बनाए रखें। अतिरिक्त भोजन से बचते हुए स्वस्थ मन और सकारात्मक ऊर्जा के साथ क्रमबद्ध रूप से परीक्षा की तैयारी करें। उन्होंने कहा कि परीक्षा केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम ही नहीं बल्कि ज्ञान, अभिव्यक्ति एवं आत्ममूल्यांकन का अवसर भी है।

इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने बताया कि 10 दिसंबर से विश्वविद्यालय के चार जनपदों– सिद्धार्थनगर, महाराजगंज, बस्ती एवं संत कबीरनगर के सभी संबद्ध महाविद्यालयों की परीक्षाएँ संचालित हो रही हैं। निष्पक्ष एवं पारदर्शी परीक्षा सम्पन्न कराने के लिए कुल 232 परीक्षा केंद्र स्थापित किए गए हैं। उत्तर पुस्तिकाओं के सुरक्षित संग्रहण हेतु सात नोडल केंद्र बनाए गए हैं, जिनके माध्यम से उत्तर पुस्तिकाएँ विश्वविद्यालय के मुख्य केंद्र पर सुरक्षित जमा की जा रही हैं।

उन्होंने बताया कि कुल पांच लाख पचहत्तर हजार से अधिक परीक्षार्थी इस परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं। सभी केंद्राध्यक्षों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि नियमों के अनुरूप पारदर्शी, सुरक्षित और व्यवस्थित परीक्षा कराई जाए तथा विद्यार्थियों के बैठने, प्रकाश, पानी एवं विद्युत से संबंधित सभी व्यवस्थाएँ पूरी तरह सुदृढ़ रहें।

परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने बताया कि परीक्षा की शुचिता एवं पारदर्शिता को बनाए रखने के लिए विश्वविद्यालय स्थित सीसीटीवी कंट्रोल रूम से ऑनलाइन परीक्षा की मॉनिटरिंग की जा रही है। सभी केंद्राध्यक्षों को निर्देश दिया गया है कि परीक्षा के समय परीक्षा कक्षों में सीसीटीवी कैमरे व्यवस्थित ढंग से संचालित होते रहें उनमें किसी प्रकार का व्यवधान होने पर इसकी जवाबदेही संबंधित परीक्षा केंद्र की होगी। परीक्षा की सुचिता और पारदर्शिता सर्वोपरि है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का कश्मीर विश्वविद्यालय के साथ समझौता–ज्ञापन

दिसम्बर माह में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के खाते में एक और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि जुड़ गयी, जबकि उसका समझौता–ज्ञापन कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर के साथ हुआ। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु तथा कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर के बीच छात्र एवं शिक्षक आदान–प्रदान, संयुक्त शोध, अकादमिक सहयोग एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतु इस महत्वपूर्ण समझौता–ज्ञापन (एमओयू) पर दोंनों विश्वविद्यालयों के कुलपतियों द्वारा हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता–ज्ञापन विश्वविद्यालय परिषद की बैठक के अवसर पर लोकभवन, श्रीनगर में संपन्न हुआ। इस अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह एवं कश्मीर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलोफर खान ने समझौता–ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। कार्यक्रम की गरिमामयी अध्यक्षता जम्मू–कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर एवं कुलाधिपति मनोज सिन्हा ने की, जबकि मुख्यमंत्री एवं प्रो–चांसलर उमर अब्दुल्ला की विशेष उपस्थिति ने कार्यक्रम को और अधिक महत्व प्रदान किया।

समझौता–ज्ञापन की महत्ता को बताते हुए कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से कहा कि भारत–नेपाल सीमा पर स्थित सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, जो महात्मा गौतम बुद्ध की शांति, करुणा और ज्ञान–परंपरा का प्रतीक है, तथा उत्तर भारत के उत्तरी छोर पर स्थित कश्मीर विश्वविद्यालय, जो महान इतिहासकार कल्हण जैसी विभूतियों की समृद्ध बौद्धिक विरासत का केंद्र रहा है, के बीच हुआ यह समझौता केवल एक

औपचारिक अकादमिक करार नहीं, बल्कि राष्ट्रव्यापी ज्ञान–संवाद का सशक्त सेतु है। उन्होंने बताया कि यह एमओयू तराई क्षेत्र से लेकर हिमालयी भू–भाग तक शिक्षा, शोध और सांस्कृतिक संवाद की एक अखंड धारा स्थापित करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि तराई और हिमालय जैसे संवेदनशील भौगोलिक क्षेत्रों के संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण, जैव–विविधता तथा जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चुनौतियों के अध्ययन और समाधान की दिशा में संयुक्त शोध की नई संभावनाएँ भी इस सहयोग से सशक्त होंगी। पर्यावरणीय सततता और क्लाइमेट चेंज पर केंद्रित अकादमिक अनुसंधान दोनों विश्वविद्यालयों के लिए एक महत्वपूर्ण साझा कार्यक्षेत्र बनेगा।

कुलपति ने अपने वक्तव्य में आगे कहा कि इस समझौते से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षकों को विशेष रूप से लाभ मिलेगा। अकादमिक समूहों के स्तर पर संयुक्त शोध परियोजनाएँ, शिक्षक एवं छात्र आदान–प्रदान, सेमिनार, कार्यशालाएँ, अतिथि व्याख्यान तथा साझा प्रकाशन के अवसर सुलभ होंगे। इससे विद्यार्थियों को बहुसांस्कृतिक और बहुक्षेत्रीय शैक्षणिक अनुभव प्राप्त होगा तथा शिक्षकों को अंतर्विषयी शोध, नवाचार आधारित शिक्षण और राष्ट्रीय स्तर पर अकादमिक नेटवर्किंग को सुदृढ़ करने का अवसर मिलेगा।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने लेफ्टिनेंट गवर्नर एवं कुलाधिपति मनोज सिन्हा तथा मुख्यमंत्री एवं प्रोचांसलर उमर अब्दुल्ला के मार्गदर्शन और सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विश्वास जताया कि यह साझेदारी 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को मजबूत करेगी और उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं समाज के व्यापक हित में दूरगामी एवं सकारात्मक परिणाम प्रदान करेगी।

हमारी भावना है यह, सुखद नववर्ष सबको हो।
हमारी कामना है कि सतत उत्कर्ष सबका हो।
सभी का मार्ग निष्कंटक बने नववर्ष में प्रति पग,
हमारी प्रार्थना है लक्ष्य अपना प्राप्त सबको हो।

नवल उत्साह जीवन में नया यह वर्ष भर जाये।
सभी की हर तरह की कामना पूरी यह कर जाये।
रुके हों काम सब पूरे, नये संकल्प शुभ जागें,
हमारे राष्ट्रजीवन में सुखद यह रंग भर जाये।

(कैम्पस कनेक्ट डेस्क)

नवल इस वर्ष का स्वागत कि स्वागत भावनाओं का।
बधाई के संदेशों और मंगलकामनाओं का।
सभी के स्वास्थ्य, सुख, समृद्धि की सद्भावना लेकर,
परस्पर उठ रहीं मन में सुकृत सब प्रार्थनाओं का।।

आंग्ल नववर्ष फिर से आ गया, उल्लास नव लेकर।
नया यह रंग देखो भा गया, नव रीत अब होकर।
बधाई दे रहे हम भी, मगर यह भाव है मन में,
हमारा वर्ष नव आएगा, जब बदलेगा संवत्सर।।

–पराया

सम्पादकीय

जनवरी हमारे अनेक राष्ट्रीय–सांस्कृतिक पर्वोत्सवों का माह है। प्रथम जनवरी को शासकीय नववर्ष से आरम्भ होकर मकरसंक्रान्ति तथा वसन्तपंचमी जैसे पर्व इसी माह पड़ रहे हैं। विश्व हिन्दी दिवस, युवा दिवस जैसी महत्त्वपूर्ण तिथियाँ भी इसी महीने में आती हैं। 26 जनवरी को आयोजित होने वाला हमारा गणतंत्र दिवस प्रतिवर्ष इसी माह में मनाया जाता है। हमारे दो सर्वप्रमुख राष्ट्रीय उत्सवों में से यह एक है। 15 अगस्त को हम अपनी स्वाधीनता का उत्सव मनाते हैं, तो 26 जनवरी को अपनी संवैधानिक व्यवस्था के लागू होने के उपलक्ष्य में गणतंत्र दिवस मनाते हैं। दोनों उत्सव हमारे भीतर के राष्ट्रभाव के उल्लासमय प्रकटीकरण के विशेष अवसर हैं। 15 अगस्त, सन 1947 को हम 'स्वाधीन' हुए और 26 जनवरी को 'स्वतंत्र', क्योंकि इस दिन हमने अपने नवनिर्मित संविधान के रूप में अपनी शासन–व्यवस्था को अपनाया। माने कि हमने 'स्व'–'तंत्र' लागू किया। ध्यातव्य है कि 15 अगस्त को हम 'आजाद' नहीं हुए, 'स्वाधीन' हुए। 'आजादी' में कहीं निरंकुशता और स्वेच्छाचारिता का भाव भी झलकता है, जो 'स्वाधीनता' में नहीं। 'स्वाधीन' का अर्थ है कि हम किसी दूसरे के अधीन नहीं होंगे अर्थात् पराधीन नहीं होंगे; पर 'स्व' के अधीन होंगे। यह 'स्व' हमारी अपनी चेतना से लेकर अपनों अर्थात् राष्ट्रवासियो तथा राष्ट्र के द्वारा अपनाये गये 'स्व–तंत्र' तक व्याप्त है। स्वाधीन में भी हम अधीन होंगे, पर किसी दूसरे के नहीं– अपने। अपने अधीन होने के भी अनेक अभिप्राय हैं। अध्यात्म के क्षेत्र में तो अपनी इच्छाओं या इन्द्रियों के द्वारा न संचालित होकर उनको अपने अनुसार संचालित करना अर्थात् उनको स्व–नियन्त्रित करना आता है। सामान्य व्यवहार में हमारे 'स्व' की सीमा वहाँ समाप्त हो जाती है, जहाँ 'पर' की आरम्भ होती है। इसके लिये महाभारत में कहा गया है– 'आत्मने प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत।' अर्थात् जो अपने लिये प्रतिकूल लगे, वह दूसरे के साथ न करो। कुल मिलाकर तात्पर्य यह कि हम वहीं तक स्वतन्त्र हैं जहाँ तक दूसरे की स्वतन्त्रता में बाधा नहीं बनते।

लेकिन राजनीतिक सन्दर्भ में 'स्वाधीनता' का अभिप्राय विस्तार लिये हुए है। यहाँ 'स्व' की परिभाषा में अपने लोग (अपने राष्ट्र–समाज के) तथा अपने द्वारा चुनी गयी व्यवस्था आती है। स्वतन्त्रता–प्राप्ति से पूर्व हमारे देश पर अंग्रेज शासन कर रहे थे, जिनका उद्देश्य हमारा हित करना नहीं, बल्कि हमारा शोषण कर अपने तथा अपने देश को सुखी एवं समृद्ध बनाना था। वे न हमारे देश के लोग थे, न हमारी इच्छा से चुने गये लोग। इसलिये उन्हें वैसी चिन्ता भी हमारी नहीं थी। जाहिर है, ऐसे में उनकी व्यवस्था में भी हमारा हस्तक्षेप नहीं था। उनके द्वारा बनाये भले–बुरे नियम–कानूनों को मानने को हम बाध्य थे।

लम्बे संघर्ष के पश्चात् 1947 में विदेशी दासता से हमें मुक्ति मिली और 'स्वराज' की प्राप्ति हुई। पर हमारी कामना मात्र 'स्वराज' के प्राप्त होने तक सीमित नहीं थी, अपितु उसके आगे 'सुराज' के लाने तक की भावना हमारी थी। 'स्वराज' इसकी पहली सीढ़ी मात्र था। वास्तविक उद्देश्य तो 'सुराज' ही था जो दीर्घकाल से हमारा अभीप्सित था। यह अपनी शासन–पद्धति विकसित किये बिना सम्भव नहीं था। एतदर्थ हमने अपने लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था चुनी, जिसमें हमारे 'स्व' की भूमिका प्रमुख हो जाती है। 'स्वराज' से 'सुराज' तक पहुँचने की अपनी यह चिर आकांक्षा हमें अपने द्वारा चुने गये अपने प्रतिनिधियों (राष्ट्रवासियों) द्वारा पूरी करनी थी। इसके लिये दो वर्षों से भी अधिक के कठोर परिश्रम तथा गम्भीर विचार–विमर्श के उपरान्त हमने अपना संविधान निर्मित किया, जो 26 जनवरी 1950 को राष्ट्र के द्वारा अंगीकार किया गया। यही हमारा गणतन्त्र दिवस है जो कि एक प्रकार से हमारा 'स्वतन्त्र' दिवस भी है।

इस 'स्व–तंत्र' अर्थात हमारी अपनी व्यवस्था को लेकर बहुत से किंतु–परंतु बहुत से लोगों के मन में हो सकते हैं, पर वह हमारे लिए कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं, क्योंकि उनमें सतत सुधार का अधिकार भी हमारा ही है, जिसका हमने समय–समय पर उपयोग किया भी है। आवश्यक यह है कि अपने तंत्र के प्रति हमारी जो जवाबदेही है, हमारी जो कर्तव्यपरायणता हैं, उसके प्रति हमारी निष्ठा बनी रहनी चाहिए। संविधान की, समाज की, राष्ट्र की और स्वयं हमारी भी हमसे जो अपेक्षा है, वह हमारे द्वारा पूरी होनी चाहिए। अपने कर्तव्यों के प्रतिपालन का हमारा उत्साह कम नहीं होना चाहिए। समस्याएं अनंत हैं। उनको उठाने वाले भी असंख्य हैं; पर उनके समाधान करने वाले भी हैं। उन समस्याओं के उलझावों भरे पथ से गुजरकर अपनी मंजिल पाने वाले और दूसरों के पथ को सुगम करने वाले भी हैं। इसलिए निराशा नहीं, शुभाशा हमारे भीतर सतत जागृत रहनी चाहिए। अपेक्षा नहीं, पहल हमारे द्वारा हमेशा की जानी चाहिए। यही हमारी और राष्ट्रोन्नति का आधार है।

कभी–कभी हम स्वतन्त्रता का भी कुछ अधिक ही मतलब निकाल लेते हैं। अपने तन्त्र में हमें यह अधिकार प्राप्त है कि यदि कभी कहीं कुछ अनुचित लगे या नियमानुकूल न लगे तो हम उसका विरोध भी कर लें। पर यह विरोध करते समय यह सदैव ध्यान में रहना चाहिए कि हम विरोध किसका कर रहे हैं। अक्सर यह विरोध विनाश की ओर मुड़ जाता है, तब बड़ा निराश करता है और लगता है कि शायद हमने अपनी स्वतन्त्रता का अर्थ ठीक से जाना ही नहीं। विरोध करने का मतलब चीजों को मिटाना या बिगाड़ना नहीं होता, खास तौर से तब जब कि वे चीजें हमारी ही हों। विरोध तो हमें अपने घर में भी कभी करना पड़ जाता है। उसके अनेक तरीके होते हैं; पर हम अपने घर को या घर के किसी सदस्य को कभी हानि पहुँचाने के बारे में सोचते भी नहीं, क्योंकि उससे हम लगाव रखते हैं, अपनत्व का अनुभव करते हैं।

यही भाव हमारा अपने राष्ट्र के प्रति होना चाहिए, अपनी संस्थाओं के प्रति होना चाहिए, राष्ट्र की सम्पत्तियों के बारे में होना चाहिए, क्योंकि वह सब हमारा ही है। अगर व्यवस्था हमारी है, देश–राज्य–संस्थान हमारा है, वहाँ के लोग हमारे हैं, तो निश्चित तौर पर उनकी सम्पत्ति भी हमारी ही है। ऐसे में उनको हानि पहुँचाने का विचार भी कैसे हमारे मन में आ सकता है ? लेकिन कभी–कभी ऐसा होता है जो देश को अपार क्षति पहुँचा जाता है और एक संवेदनशील मन को दारुण दुख दे जाता है। पन्द्रह अगस्त एवं छब्बीस जनवरी को निकलने वाली प्रभातफेरियों में शिक्षण संस्थाओं में हमसे बचपन में यह नारे लगवाये जाते हैं कि 'जन्म जहाँ पर हमने पाया, अन्न जहाँ का हमने खाया, ...वस्त्र जहाँ के हमने पहने... उसकी रक्षा हम करेंगे, हम करेंगे, हम करेंगे।' इसके बाद क्या होता है कि हम अपनी उस शपथ को भूल जाते हैं जो अनेक बार हमारे द्वारा ली गयी होती है और उन्माद में बहकर बात–बात में तोड़–फोड़, आगजनी, लूट, वहशीपन आदि पर उतारू हो जाते हैं। इसलिये गणतन्त्र दिवस हमारे लिये प्रत्येक वर्ष इस शपथ को दोहराने तथा इस संकल्प का पूरी दृढ़ता के साथ पालन करने हेतु प्रतिबद्धता व्यक्त करने का दिन भी होना चाहिए कि हमारे द्वारा कभी भी कोई कृत्य ऐसा नहीं होगा जो हमारे राष्ट्र या समाज को किसी भी तरह की क्षति पहुँचा सके, क्योंकि यह किसी और की नहीं, अन्ततः हमारी ही क्षति है।

जनवरी माह स्वामी विवेकानन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जैसे राष्ट्रनायकों के इस धराधाम पर अवतरण का माह है तो महात्मा गांधी की दुखद विदाई की याद दिला जाने वाला महीना भी है। भारतरत्न डॉ. भगवान दास का जन्मदिवस भी इसी महीने पड़ता है। इन सभी महापुरुषों को सश्रद्ध नमन करते हुए सभी को जनवरी माह के समस्त राष्ट्रीय–सांस्कृतिक पर्वोत्सवों की बधाई और शुभकामनाएं। जय भारत, जय भारती।

अंग्रेजी अनिवार्यता की ओर बढ़ रही है !

–श्री अटल बिहारी बाजपेयी

सचमुच में आज आपने ऐसा विषय उठाया है, जो मेरे मन को लगातार कुरेदता रहता है। थोड़े दिन पहले यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन के अध्यक्ष मुझसे मिलने के लिए आए थे। मैंने उन्हें कहा कि जिन विषयों में अभी भी हिंदी में परीक्षा नहीं होती उनमें परीक्षा का प्रबंध होना चाहिए। भारतीय भाषाओं में परीक्षाएँ हों। वे अपनी कठिनाइयाँ गिना रहे थे।

अंग्रेजी की अनिवार्यता हटाने के लिए हमें मिलकर प्रयास करना पड़ेगा। यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन तो बहुत ऊँची चीज है। अब विद्यालयों में, शिक्षा संस्थाओं में पहले दर्जे से अंग्रेजी को अनिवार्य करने के लिए कदम उठाए गए हैं, अंग्रेजी अनिवार्य की जा रही है। दिल्ली में भी अनिवार्यता है। गाड़ी उलटी घूम रही है। मेरा निवेदन है कि हम इसको रोकने का प्रयास करें। शिक्षा कोई लेना चाहता है ले, अंग्रेजी के साथ उसको अपनी भाषा तो पढ़नी पड़ेगी।

यह ठीक है कि बच्चे बड़े मेधावी होते हैं। वच्चे ज्यादा भाषाएँ सीख सकते हैं। भाषाएँ सीखने में उम्र में बड़ों को कठिनाई होती है, वह बच्चों को नहीं होती। लेकिन फिर भी कितना बोझ बढ़ रहा है, मैं देख रहा हूँ। किताबों की दृष्टि से, विषयों की दृष्टि से। इसके लिए जो पालक वर्ग है, उसको संगठित होना पड़ेगा। अब होड़ लगी है पब्लिक स्कूल में जाने की। वहाँ तो अंग्रेजी है। कैसे रोकेंगे, कानून नहीं रोक सकता। किसी भाषा को पढ़ने पर हम प्रतिबंध कैसे लगा सकते हैं। इसीलिए मैं राजकाज की बात कह रहा हूँ। शिक्षा के क्षेत्र में आप जो भी नीति अपने लिए उपयुक्त समझते हैं, वह अपनाएँ। उस पर अमल करें। लेकिन राजकाज में भारतीय भाषाओं का प्रयोग होना चाहिए। राज्यों में तो अपनी–अपनी भाषाओं का प्रयोग हो रहा है। लेकिन वहाँ भी जो अंग्रेजी जानने वाले अफसर हैं और जिनकी एक कुशलता अच्छी टिप्पणी लिखने की है, उनके कारण अंग्रेजी से पिंड नहीं छूट रहा। मैं अपने मंत्रालय में देखता हूँ, अंग्रेजी धीरे–धीरे फैल रही है, बढ़ रही है।

अंग्रेजी का दबदबा बढ़ रहा है, क्योंकि पहले यह शर्त लगाई गई थी. अब यह शर्त नहीं है कि अगर हिंदी में कोई नोट लिखेगा तो फिर उसको अंग्रेजी का अनुवाद देना पडेगा। अब ऐसा नहीं है। लेकिन कर्मचारी लिखते नहीं हैं, अफसर लिखते नहीं हैं। अफसर अंग्रेजी में ढले हैं और उसमें उत्तर प्रदेश के अफसर में और तमिलनाड के अफसर में कोई अंतर नहीं है।

वह उनकी अपनी अंग्रेजी भाषा है। इसीलिए राजकाज में हिंदी का प्रवेश कठिन हो रहा है। अब कैसे किया जाए? मैं चाहता हूँ कि आप हमको इस संबंध में रास्ता दिखाएँ। मैं चाहता हूँ कि कुछ हो। आप जानते हैं, इस बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि अगर मैं यूनाइटेड नेशंस में हिंदी में बोलता हूँ तो उसका कारण यह है कि वहाँ पर हिंदी का कोई विरोध नहीं करता। अब मैंने देश में बदली हुई हवा देखी है। पहले दक्षिण में हिंदी में भाषण करना कठिन होता था। बैंगलोर जैसे नगर में जहाँ पर वहाँ की भाषा के अभिमानी एक आंदोलन करते थे कि यहाँ अगर बोलना है तो फिर कन्नड़ भाषा में ही बोलो; अब वे हिंदी में सुन रहे हैं, हिंदी में माँग कर रहे हैं। उनसे अगर पूछा जाए क्या अंग्रेजी में बोलें, अनुवाद तो करना ही पड़ेगा। वे कहते हैं आप हिंदी में ही बोलिए। तो हिंदी फैल रही है। हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है।

मैं अंडमान गया था, अंडमान में और प्रदेशों के लोग आकर बसे हैं। आप जानते हैं, अंडमान की भाषा हिंदी है। राजभाषा भी हिंदी ही है। लोग अपनी अलग–अलग भाषाएँ बोलते हैं। मगर एक सामान्य भाषा, सबकी भाषा हिंदी है। दक्षिण में अब हिंदी का विरोध नहीं है। लेकिन यह जो नौकरशाही है, यह हिंदी के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। इसके लिए अब अखिल भारतीय परीक्षाओं का ही रूप बदल दिया जाए। इस तरह की परीक्षाएँ कब तक चलती रहेंगी। इस तरह अंग्रेजी का माध्यम कब तक बना रहेगा। अब कठिनाई यह हो रही है कि मातृभाषा में लड़के लड़कियाँ पढ़ रहे हैं और अचानक उन्हें जाकर अंग्रेजी का सामना करना पड़ता है। अंग्रेजों की प्रतियोगिता में बैठना पड़ता है। इसलिए शुरू से बच्चे को अंग्रेजी के माध्यम के स्कूल में भेजो, यह अब आवाज उठ रही है। गरीब भी चाहता है कि उसका बेटा अफसर बने। वह समझता है अफसर बनने का एक ही तरीका है कि उसको अंग्रेजी बोलना आना चाहिए। इसीलिए अंग्रेजों विद्यालयों में जाने की होड़ लगी है। इसको बदलना पड़ेगा। मेरा निवेदन है कि आप लोग इस पर थोडा सा विचार करें। हम लोग कभी मिलकर बैठें। कुछ ठोस प्रस्ताव चाहिए। क्या कुछ कदम उठाए जाएँ। मैं तैयार हूँ किसी भी सीमा तक जाने के लिए। बस इस काम को इस तरह से करना पडेगा कि जो अहिंदी भाषी हैं. उन्हें यह न लगे कि उनकी भाषा के अधिकार को छीना जा रहा है या कम किया जा रहा है। देश की एकता सर्वोपरि है यह तो बताने की आवश्यकता नहीं है।

इस देश की एकता अंग्रेजी से नहीं चल रही है। यह बात अलग है कि कुछ राज्य ऐसे हो गये हैं, जो यह कहते हैं कि हमारी राजभाषा अंग्रेजी है। आपको याद होगा, एक बार लोकसभा में झड़प हो गई थी. कोई हिंदी में बोल रहे थे। आपत्ति हुई कि आप हिंदी में मत बोलिए। यह सवाल अंग्रेजी में दिया गया था, इसका उत्तर भी अंग्रेजी में ही होना चाहिए। मंत्री महोदय हिंदी में जवाब दे रहे थे। तो जो सदस्य थे उन्होंने कहा कि हिंदी तो स्वदेशी भाषा है. हिंदी तो अपनी भाषा है। जो मेंबर थे उन्होंने कहा कि हमारे लिए तो अंग्रेजी अपनी भाषा है। हिंदी विदेशी भाषा है। प्रतिक्रिया में कभी–कभी ऐसी बातें कह दी जाती हैं। उससे भी सावधान रहने की जरूरत है। क्योंकि इस समय देश की जो स्थिति है उसमें कब कौन सा मुद्दा विघटन को जन्म देगा, विघटन को बढ़ावा देगा, यह कह नहीं सकते। कब कौन सा मुद्दा बडे भारी विवाद का रूप ले लेगा। इसीलिए हम संभलकर चलें, चतुराई से चलें। मगर ठोस काम करें। यह बहुत आवश्यक है। हिंदी का प्रयोग बढ़ाया जा सकता है। इसमें सिद्धांततः कोई मतभेद नहीं है। कठिनाई व्यवहार की है।

(30 जनवरी, १९९९ को भारतीय भाषा सम्मेलन के प्रतिनिधियों को प्रधानमंत्री निवास पर संबोधन; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'अटल बिहारी बाजपेयी : संकल्प–काल' के पृ. 191–92 से साभार)

क्रांति का सूत्र 'वंदे मातरम्'

'वंदे मातरम्' प्रभावशाली मंत्र है। आज भी इस मंत्र के उच्चारण मात्र से देशप्रेम की तरंगें मन को उद्वेलित कर देती हैं। स्वातंत्र्य समर का संपूर्ण इतिहास 'वंदे मातरम्' की ध्वनि से गुंजायमान है। इस मंत्र के उद्घोषक ऋषि थे श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (चटर्जी)। उनका व्यक्तित्व अनोखा था। उन्होंने इस क्रांति मंत्र का जन्मदाता होने के बावजूद अंग्रेजी सरकार के प्रशासनिक पद (डिप्टी कलक्टर) का भी कार्यभार सँभाला। सँभाला ही नहीं, सेवानिवृत्त होने तक पूर्ण निर्वाह किया। यह उनकी कलम का कमाल था कि देशप्रेम की तरंगों से आजीवन तरंगित रहने पर भी अंग्रेजों की क्रूर चाल और दमनकारी नीतियों से स्वयं बचे रहे।

श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का जन्म 26 जून, 1838 को बंगाल के चौबीस परगना के गठालपाड़ा नामक स्थान पर हुआ था। पिता श्री यादव चंद्र भी सरकारी कर्मचारी थे। साधु–संन्यासियों के प्रति आस्था के कारण उनकी यथासंभव सेवा करते रहते थे। पिताजी के प्रभाव के कारण शरत भी सरकारी अधिकारी बने तथा डिप्टी कलक्टर जैसे उच्च पद पर कार्य किया। इतने उच्च पद पर तथा सरकारी कामकाज की व्यस्तता के बावजूद कोई व्यक्ति देशभक्ति से परिपूर्ण साहित्य का सृजन कर सकता है, इस तथ्य को स्वीकार करने में साधारण जन संदेह करते हैं, जबकि यह शत–प्रतिशत सत्य है।

वास्तव में उच्च पद पर अधिकारी रहते हुए उन्होंने अंग्रेजों के गुण तथा दोषों को निकट से देखा। उनकी कूटनीतिक चालों और व्यवहारों को समझा। जनता की समस्याओं से भी सीधे संपर्क में रहे। देशवासियों की कठिनाइयों, कमजोरियों और गुण–अवगुणों की जानकारी इस पद पर रहते हुए जानी–समझी। दोनों ओर का सही तथ्यात्मक ज्ञान उनके साहित्य सृजन में सदैव सहायक रहा। यूँ तो छात्र जीवन से ही उनकी लेखन में रुचि रही थी। बी.ए. (1858) करने से पहले ही उनकी रचनाएँ गद्य, पद्य दोनों प्रकार की छपी थीं। पहले उन्होंने अंग्रेजी में लिखा था, बाद में बंगला में लिखना शुरू किया। सच तो यह है कि वे अंग्रेजी में अधिक ख्याति प्राप्त कर सकते थे. परंत भारतीय समाज को वे जिस सत्य से अवगत कराना चाहते थे. फिर वह कैसे हो पाता ? क्रांति का जो संदेश बंकिम चंद्र जन–जन तक पहुंचाना चाहते थे. वह अंग्रेजी के माध्यम से नहीं दिया जा सकता था। अतः उन्होंने मातृभाषा बंगला में साहित्य रचा। इस प्रकार अंग्रेजों की नजर से भी वे स्वयं को बचा पाए।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का साहित्य अधिकांशतः उपन्यासों के रूप में उपलब्ध है। लोग इन्हें कपोलकल्पित भी मान सकते हैं। 'आनंदमठ' और 'देवी चौधरानी' उपन्यास होते हुए भी केवल काव्य प्रसूत कहानी नहीं हैं। भारतीय जनमानस इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विश्वास करता है। यद्यपि अंग्रेज सरकार उन पर मुकदमा चलाती तो वे स्वयं इसे काल्पनिक ही बताते। संथालों के द्वारा गहन वन में माँ काली की मूर्ति का पूजन किया जाना, भारत–माता का साक्षात् स्वरूप मानकर उसकी अर्चना 'वंदे मातरम्' गीत से करना तथा संन्यासियों का परस्पर इसी वंदे मातरम् से परस्पर अभिवादन करना स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक संदेश प्रमाणित हुआ। क्रांतिकारियों ने 'वंदे मातरम्' को आदर्श वाक्य मानकर, इसे बोलकर हँसते–हँसते घोर यातनाएँ सहते–सहते अपना जीवन मृत्यु को सौंप दिया। 'वंदे मातरम्' का गायन करते हुए फाँसी का फंदा चूम लिया। प्राणों का मोह त्याग दिया। भला ऐसा महामंत्र काल्पनिक कैसे हो सकता है?

'देवी चौधरानी' उपन्यास की नायिका भी काल्पनिक पात्र नहीं। वास्तव में वह देवी अपने साथ एक क्रांतिकारी सेना रखती थी। हुगली की धारा में उनके बजरे (रिहायशी नाव) चलते थे। समय–समय पर उनके क्रांति वीर अंग्रेजों की नावों को लूट भी लेते थे। सरकारी पुलिस कभी देवी चौधरानी को पकड़ नहीं पाई। जिस ढंग से उपन्यास की रचना की गई है, वह काल्पनिक सा ही लगता है। वास्तव में देवी चौधरानी संन्यासी विद्रोह की प्रमुख थीं। उनके साथी उन्हें देवी के प्रतीक रूप में सम्मान देते थे। अंग्रेज अधिकारी लेफ्टिनेंट ब्रेनन ने एक रिपोर्ट में लिखा है कि भवानी पाठक की गतिविधियों के पीछे देवी चौधरानी का हाथ था। भवानी पाठक अपने साथियों के साथ नावों में घूमने आए अंग्रेजों को लूट लिया करता था। लूट के इस माल को वह देवी चौधरानी को भेंट करता था। उससे उनकी क्रांतिकारी सेना का खर्च चलता था। भवानी पाठक अंग्रेजों के द्वारा मारे गए, लेकिन फिर भी देवी चौधरानी की गतिविधियाँ चलती रहीं। ब्रेनन के अनुसार वह कभी अंग्रेजों की पकड़ में नहीं आई। वह राजरानी बनकर नदी पर शासन करती थी। संन्यासी विद्रोही क्रांतिवीर उनके आदेशों का पालन करते थे तथा उनकी वीरता को नमन करते थे। अंग्रेजों के रिकॉर्ड के अनुसार देवी चौधरानी कभी उनके हाथ नहीं आई।

श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का चरित्र अनोखा था, क्योंकि वे सरकारी उच्च पद पर भी आसीन रहे और स्वातंत्र्य समर की गाथा भी अपनी लेखनी से जन–जन तक पहुँचाते रहे। सन् 1872 में उन्होंने 'बंग दर्शन' नामक पत्रिका भी निकाली। उनके अनेक उपन्यास बंगाली समाज के रीति–रिवाजों, गुणों–अवगुणों का सजीव वर्णन करते हैं। इसीलिए वे न केवल बँगला साहित्य की अमूल्य निधि बने, अपितु भारत की हिंदी, गुजराती, मराठी आदि अन्य भाषाओं में अनूदित होकर समस्त भारतीय समाज की धरोहर बन गए। उनका महत्त्व डेढ़ सौ वर्ष बाद भी बरकरार है। उनकी रचनाओं में नारी जीवन को भी अत्यंत बारीकी से चित्रित किया गया है। देशभक्ति और प्रेम तो उनकी रचनाओं का प्राण है, जो सदैव सर्वत्र व्याप्त है।

सन् 1894 की 8 अप्रैल को वे अपना पार्थिव शरीर त्यागकर परलोक सिधार गएः परंतु भारतीय जनमानस और साहित्य में तो वे अमर हैं। उनका प्रभाव सदा–सर्वदा जीवित रहेगा।

(प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित आचार्य मायाराम 'पतंग' की पुस्तक 'राष्ट्र–प्रेम की कहानियाँ' से साभार)

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सिद्धार्थनगर

–डॉ. यशवन्त यादव

सोलहवीं सदी से अठारहवीं सदी तक आते–आते मुगल सम्राज्य कमजोर होता गया। नवाबों और देशी नरेशों की स्थिति बिगड़ती गई। वे परस्पर लड़ने

लगे। फलस्वरूप अंग्रेजों ने भारत पर कब्जा कर लिया। अंग्रेजी दासता से मुक्ति का प्रथम प्रयत्न सशस्त्र संग्राम के रूप में सन 1857 में हुआ जो दुर्भाग्य से विफल रहा। 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद धीरे–धीरे फिर आजादी के लिये प्रयत्न आरम्भ हुए, जिनमें गरम दल एवं नरम दल दोनों की भूमिका रही। जनमानस को जाग्रत करने के साथ–साथ आत्मनिर्भरता, स्वदेशी वस्तुओं के प्रति अपनत्व, व्यापक शिक्षा, त्याग और बलिदान की भावना पर बल देते हुए पूर्ण स्वराज्य पाने का संकल्प आगे चलकर जोर पकड़ता गया। कांग्रेस में महात्मा गांधी और श्रीमती एनी बेसेन्ट का सम्मिलित होना एक नये युग का सूत्रपात समझा गया। जनता में बेचैनी बढने लगी थी। क्रान्तिकारी गतिविधियों और जन–असन्तोष के साथ–साथ भारत में राजनैतिक गतिरोध बढ़ता चला गया। यह हकीकत है कि भारत की महान आजादी आने में केवल कुछ बड़े राष्ट्रीय नेताओं का ही योगदान नहीं रहा था, बल्कि इसमें भारत की पवित्र भूमि के कण–कण से उपजे आम जन के स्नेह और अनुराग की भी महती भूमिका थी।

गुलामी की जिस आग में सारा देश जल रहा था उसके विरुद्ध स्वतन्त्रता की चाहत रखने वाले वीर सेनानी क्रांति की ज्वाला जला रहे थे। देश भर में आम जन फाँसी के फंदे को वरमाला बनाकर और मौत को अपना जीवनसाथी बनाकर बलिदान हो रहे थे। यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि नारा सबका एक था, मंजिल सबकी एक थी, कुर्बानी जिसके लिए दी, वो चाहत सबकी एक थी। अनेकता में जिसके लिए एकता थी, वह आजादी की चाहत थी। सिद्धार्थनगर भी देश की आजादी की लड़ाई में अपना सब कुछ न्यौछावर करने मे किसी भी अंचल से पीछे नहीं रहा। देश को आजाद कराने की भावना से ओत–प्रोत सिद्धार्थनगर के प्रत्येक भू–खण्ड एवं गाँव–जवार से कई दीवानों ने हँसते–हँसते अपने आपको कुर्बान कर दिया।

स्वतन्त्रता–आन्दोलन को रोकने के लिए रौलट एक्ट जैसा काला कानून अंग्रेजों ने देश पर लाद दिया। महात्मा गांधी ने जब इसका विरोध किया तो सिद्धार्थनगर जनपद तक भी यह भावना पहुँची। बांसी नगर में स्थित रतनसेन इण्टर कालेज में उस समय शिक्षारत् सभी छात्र कालेज से निकलकर उक्त आन्दोलन में कूद पड़े। खिलाफत आन्दोलन भी इसी समय शुरू हुआ था। इस क्षेत्र के तेजगढ गाँव के लोगों ने पंचायत गठित कर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ प्रशासन और शासन स्तर पर अपना विरोध दर्ज कराया। तत्समय ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ असहयोग आन्दोलन ने अपनी गति को प्राप्त कर लिया था। तब तेजगढ़ के अलावा भगौतापुर, अड़गड़हवा, मधुकरपुर, हरैया आदि गाँवों के लोग भी आन्दोलन में शामिल हो गए थे। समय बीतता गया और आन्दोलन किसी न किसी रूप में जारी रहा। महात्मा गांधी द्वारा दिया गया 'करो या मरो' का नारा यहाँ के लोगों पर व्यापक असर कर गया। स्वतन्त्रता–आन्दोलन में जनपद सिद्धार्थनगर का प्रसिद्ध स्थल शोहरतगढ़ स्वतन्त्रता–सेनानियों का पनाहगाह बना था। भारतीय स्वतन्त्रता–आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सेनानियों के जन्मस्थल एवं क्रांतिस्थल डुमरियागंज, जोगिया उदयपुर, खानतारा गाँव का टोला पिकौरा, पैदा, दुधवनियां बुजुर्ग, तेजगढ, अमरगढ़, बांसी आर्य–समाज मन्दिर, उसका बाजार, बावनी इमली आदि का उल्लेख इतिहास के पन्नों मे स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

शोहरतगढ़ में शहीद–स्मारक बना हुआ है। यह अमर शहीद बुधईराम की स्मृति में बना है, जिन्हें अंग्रेजी शासन में घोड़ों की टापों के नीचे कुचलकर शहीद कर दिया गया। उनके ही एक साथी परमेश्वरदत्त को कोड़े मारते हुए लखनऊ जेल ले जाया गया, जहाँ उनका बलिदान हो गया। इन दोनों के बलिदान के बाद भी क्रान्ति की चिनगारी बुझी नहीं, अपितु इसी क्षेत्र के कोतवाल सिंह, शीतलप्रसाद त्रिपाठी, कोदई प्रसाद, बेनी माधव मिश्र, महादेव चौधरी आदि ने मोर्चा सँभाला और अंग्रेज सरकार की नाक में दम कर दिया।

सिद्धार्थनगर से सटे उसका बाजार क्षेत्र के निवासियों के कारनामे भी इतिहास में दर्ज हैं। पं0 सुभद्रनाथ त्रिपाठी, मथुराप्रसाद पाण्डेय, रामसमुझ तिवारी, रूपनारायण शर्मा के नेतृत्व में यहां क्रान्तिकारियों ने असहयोग आन्दोलन के समय थाने पर कब्जा कर लिया था और वहाँ स्थित पाँच पेड़ों पर 'आजादी' लिख दिया था। इनमें से एक वृक्ष अभी भी है। इस आन्दोलन का जिक्र महात्मा गांधी ने अपने **'नवजीवन'** तक में किया था।

डुमरियागंज तहसील में स्थित अमरगढ़ प्रथम स्वतन्त्रता–संग्राम की गौरवगाथा अपने में समाये है। यहां अंग्रेज अधिकारी गिलफोर्ड को मार डाला गया था, जिसकी कब्र अभी भी वहाँ मौजूद है। सन 1858 में यहां 100 से अधिक एकत्र लोगों पर अंग्रेजी सेना ने गोली चला दी थी। कुछ–कुछ जलियांवाला बाग जैसा ही जघन्य हत्याकाण्ड यहाँ हुआ था। लोग जान बचाने के लिए राप्ती नदी में कूद गये थे, तब भी उन्हें नहीं छोड़ा गया। आज यहाँ शहीदों की स्मृति में एक द्वार बनाया गया है।

ऐसे ही शाहपुर में 1935 में एक बड़ी किसान–क्रान्ति हुई थी। रमाशंकर लाल एवं राजाराम शर्मा के नेतृत्व में हजारों किसानों की रैली हुई थी।

यह देखा जा सकता है कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता–आन्दोलन में जो जोश व उत्साह देश के अन्य कोनों में व्याप्त था, वह इस छोटे से जनपद सिद्धार्थनगर में भी प्राप्त होता है। वर्णित तथ्य तो सीमित रूप में अभिव्यक्त किये गये हैं अन्यथा इसका व्यापक स्वरूप इससे बहुत भिन्न है। सिद्धार्थनगर जनपद की स्वतन्त्रता–आन्दोलन में अपनी एक अलग पहचान व गाथा रही है जिसका परिणाम रहा स्वतन्त्रता के अमृतफल की प्राप्ति।

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग

उजले दिन आयेंगे जरूर

–वीरेन डंगवाल

आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।
आतंक सरीखी बिछी हुई हर ओर बर्फ
है हवा कठिन, हड्डी–हड्डी को ठिठुराती
आकाश उगलता अंधकार फिर एक बार
संशय–विदीर्ण आत्मा राम की अकुलाती
होगा वह समर, अभी होगा कुछ और बार
तब कहीं मेघ ये छिन्न–भिन्न हो पायेंगे।
तहखानों से निकले मोटे–मोटे चूहे
जो लाशों की बदबू फैलाते घूम रहे हैं।
कुतर रहे पुरखों की सारी तस्वीरें
चीं–चीं, चिक–चिक् की धूम मचाते घूम रहे
पर डरो नहीं, चूहे आखिर चूहे ही हैं,
जीवन की महिमा नष्ट नहीं कर पायेंगे।
यह रक्तपात, यह मारकाट जो मची हुई
लोगों के दिल भरमा देने का जरिया है
जो अड़ा हुआ है हमें डराता रस्ते में
लपटें लेता घनघोर आग का दरिया है
सूखे चेहरे बच्चों के उनकी तरल हँसी
हम याद रखेंगे, पार उसे कर जायेंगे।
मैं नहीं तसल्ली झूठ–मूठ की देता हूँ
हर सपने के पीछे सच्चाई होती है
हर दौर कभी तो खत्म हुआ ही करता है
हर कठिनाई कुछ राह दिखा ही देती है।
आये हैं जब हम चलकर इतने लाख वर्ष
इसके आगे भी तब चलकर ही जायेंगे,
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

(दुश्चक्र में सृष्टा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; पृ. 26)

कवि और मुस्टण्डा

(हास्य कविता)

–हरीशकुमार शर्मा

गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में
एक सामाजिक कार्यकर्ता ने
लोगों से अच्छा–खासा पैसा उठाया,
और छब्बीस जनवरी का स्वागत करने हेतु
एक कवि को कविता पढ़ने हेतु बुलाया।
जब कवि जी मंच पर पूरे जोशोखरोश के साथ
काफी देर से अपनी कविताएं जा रहे थे सुनाये,
तभी अचानक मुहल्ले के एक मुस्टण्डे से सज्जन
हाथ में मोटी लाठी लिये
मंच के आसपास मँड़राये।
मुस्टण्डे भाई कभी बायें झाँकते, कभी दायें ताकते;
कभी मंच के आगे आते, कभी पीछे जाते;
कभी इधर लपकते, कभी उधर झपटते;
उन्हें देख–देख कवि जी के शब्द
मुँह के मुँह में जा अटकते।
लाख रोकने पर भी उनके नयन
हाथ के कागज को छोड़,
उन्हीं सज्जन की ओर जा भटकते।
कभी कविता पढ़ते उनके हाथ काँपते
तो कभी धड़कते दिल से वे
मुस्टण्डे भाई से अपनी दूरी नापते।
आखिर जब पानी सिर के ऊपर से गुजरने लगा
और कवि जी का ध्यान
कविता की ओर से बार–बार भटककर
मुस्टण्डे भाई पर जा अटकने लगा;
तो कवि जी ने कुछ करने की ठानी।
अपनी ताकत पहचानी

और अपनी पूरी कविताओं की हिम्मत को एक साथ इकट्ठी कर
उन्होंने मुस्टण्डे भाई को बुलाया।
जुबान में शहद घोलकर
बड़े मीठे तथा विनम्र शब्दों में फरमाया–
''भाई साहब! क्या बात है जो इतने बेचैन हो रहे है ?
किसे खोज रहे हैं ?
क्या कविता पसन्द नहीं आ रही है?
या कोई और बेचैनी है जो आपके दिलोदिमाग पर छा रही है ?
कहिए तो कविता दूसरी सुनाऊँ?
और यदि अच्छा न पा रहे हों तो मंच से उतर जाऊँ ?''
मुस्टण्डे भाई ने मुँह बनाया,
गर्दन को लम्बी तानकर अपनी छोटी–छोटी आँखों को
गोल–गोल घुमाया; बोले–
''रहने दे, रहने दे;
तू तो जो पढ़ रहा है, पढ़े जा
और मैं जो कर रहा हूँ वह मुझे करने दे।
तुझसे मेरा कोई लेना–देना नहीं है।
तू तो मेरा चना–चबेना भी नहीं है।
तू तो मान–न–मान हमारा मेहमान है,
इसलिये तेरी तरफ तो मेरा बिल्कुल भी नहीं ध्यान है।
मुझे तो न तेरी कविता से कुछ लेना–देना है, न तुझसे।
मुझे मतलब है तो बस उससे–
जो तुझे यहाँ लाया है
और चन्दे में अच्छे–खासे पैसे उठाकर
कवि के नाम पर तुझे हमारे सिर पर ला बिठाया है।
वह मिल जाये तो उसी की कनपटी तोड़ूँ,
और अपने प्रश्न का घोड़ा उसी के ऊपर छोड़ूँ–
कि तुझे गणतन्त्र दिवस के उत्सव के लिये यही मिला?
हमारे मेहनत से कमाये पैसों का
यह दिया तूने सिला!
अरे, अगर ऐसे ही मिमियाना था
तो इसी को क्या बुलाना था !
हम ही कौन से बुरे थे ?
इसी में कौन सुरखाब के पर जड़े थे ?''
इतना कह मुस्टण्डे भाई ने
अपनी लाठी जमीन पर पटकी,
और उधर कवि जी की साँस
रह गयी, गले की गले में अटकी !
मुस्टण्डा मुड़ा और मंच के पीछे चला गया,
अपने साथ–साथ कवि श्री की आवाज का
जादू भी ले गया !

आचार्य–हिन्दी विभाग

राजधानी में धुएँ का उत्सव

–वेद प्रकाश

सुबह होती है
और राजधानी
धूप नहीं ओढ़ती–
वह धुएँ की शाल
सम्मानपूर्वक धारण करती है।
सूरज
आजकल दिखता नहीं,
शायद किसी विभागीय फाइल में
अनुलग्नक बन चुका है।
हवा
अब तत्व नहीं रही,
वह सरकारी परिपत्र है–
जिसे पढ़ते–पढ़ते
लोग साँस लेना भूल जाते हैं।
एक्यूआई
शहर की नब्ज नहीं,
सत्ता की लाज है–
जितना बढ़ता है
उतना ही
चुप्पी गाढ़ी होती जाती है।
बच्चों के फेफड़े
नन्हे कागजी दीये हैं,
जिन्हें हम
हर सर्दी
नीति की आँधी में
जला देते हैं।
खेतों में
आग नहीं लगती,
वहाँ विवशताएँ सुलगती हैं।
शहरों में
मजदूर नहीं चलते–
वे अपनी साँसें
पीठ पर लादे होते हैं।
धनी वर्ग
हवा को बोतलों में बंद करता है,
गरीब
उसे भाग्य कहकर
पी जाता है।
यह आपदा नहीं,
यह ऋतु है–
जिसका नाम
"प्रशासन" रखा गया है।
और सबसे सुंदर व्यंग्य यह है
कि हम
इस उत्सव को
हर साल
"आपात स्थिति" कहकर
सामान्य बना लेते हैं।

(पूर्व छात्र; एम.ए. हिंदी)

बुद्ध–प्रसंग (महाप्रजापति गौतमी)

महाप्रजापति गौतमी, कोलिय राजा अंजन व रानी सुलक्षणा की दूसरी पुत्री थीं। वे महामाया की छोटी बहन थीं। महाप्रजापति गौतमी महामाया की भाँति सुंदर व सुशील थीं। इनका विवाह भी कपिलवस्तु के शाक्य राजा शुद्धोदन से हुआ था। दोनों बहनों में परस्पर बहुत प्रेम व स्नेह था। महामाया की मृत्यु के बाद महाप्रजापति गौतमी कपिलवस्तु राज्य की प्रधान राजमहिषी बनीं। महामाया की मृत्यु के बाद महाप्रजापति गौतमी ने सिद्धार्थ गौतम का पालन–पोषण एक सगी माता की भाँति किया था।

महाप्रजापति गौतमी ने अपने गर्भ से जन्में बच्चों– राजकुमार नंद तया पुत्री– रूपनंदा की अपेक्षा सिद्धार्थ गौतम की देखभाल पर अत्यधिक ध्यान दिया, जिससे राजा शुद्धोदन बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने महाप्रजापति गौतमी से कहा कि तुम वास्तव में महान माता हो, जिसने अपने वचनों के मूल्य को निष्ठापूर्वक निभाया। तुमने मेरा दिल जीतकर मुझे उपकृत किया है। तुम्हारे इस महान त्याग व निष्ठा को सदैव ससम्मान व श्रद्धापूर्वक याद किया जाएगा। सिद्धार्थ गौतम के साथ महाप्रजापति गौतमी के पुत्र व पुत्री, भाई–बहन सब साथ–साथ खेलते थे।

एक बार तथागत बुद्ध अपने भिक्खुओं के साथ कपिलवस्तु के न्यग्रोधारान में ठहरे थे। उन दिनों बहुत अधिक ठंड पड़ रही थी। ठंड लगने के कारण तथागत बीमार पड़ गए थे। तथागत की बीमारी का समाचार पाकर महाप्रजापति गौतमी ने स्नेह व श्रद्धावश दिन–रात एक करके तथागत के लिए दो घुस्सा (कंबल) तैयार किया था। तथागत को उसे समर्पित करने के लिए वे उनके पास गई और घुस्से को स्वीकार करने हेतु आग्रह किया। तथागत ने गौतमी की भावनाओं का सम्मान करते हुए कंबल को भिक्खुसंघ को भेंट करने को कहा। माता महाप्रजापति गौतमी ने पुनः आग्रह किया कि यह कंबल आपके लिए बनाया है. इसे आप ही स्वीकार कीजिए। परंतु तथागत बुद्ध ने पुनः कहा कि यह कंबल यदि संघ को मिल गया तो समझो मुझे मिल गया। तथागत बुद्ध के निकट बैठे आयुष्मान आनंद ने तथागत से कहा कि महाप्रजापति गौतमी आपकी माता, मौसी, दाया, क्षीरदायिका तथा पोषिका रही हैं। उनके प्रेम व श्रद्धा का सम्मान करके आप कंवल स्वीकार कीजिए। तब तथागत बुद्ध ने आनंद से कहा कि मैं व्यक्तिगत दक्षिणा की अपेक्षा संघ दक्षिणा का महत्त्व अधिक उपयोगी मानता हूँ। मेरी दृष्टि में संघ की प्राथमिकता का महत्त्व ज्यादा है। जो संघ को दक्षिणा देता है, समझो वह मुझे देता है। तब महाप्रजापति गौतमी ने तथागत के विचारों का आदर करते हुए कंबल को भिक्खुसंघ को समर्पित कर दिया। तथागत की वंदना व प्रशिक्षणा कर वे वापस राजमहल लौट आई।

(सम्यक प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित श्रीपति प्रसाद चौधरी की पुस्तक 'कपिलवस्तु' (पृ. 28–29) से साभार)

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में साइबर अपराध एवं सुरक्षा पर कार्यशाला सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में आज राजभवन, उत्तर प्रदेश के निर्देश पर साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का प्रारंभ कुलपति प्रो. कविता शाह के साथ आई आई टी कानपुर के C3i Hub की टीम के इंटरैक्शन सत्र से हुआ। कुलपति प्रो. शाह ने कहा कि आधुनिक तकनीक ने जहाँ जीवन को सरल बनाया है, वहीं दूसरी ओर डिजिटल अरेस्ट, बैंकिंग फ्रॉड और विभिन्न साइबर अपराधों ने गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। ऐसे में युवाओं एवं विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा की जानकारी प्रदान करना अत्यधिक आवश्यक है और शिक्षण संस्थानों की यह जिम्मेदारी है कि वे इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

इंटरैक्शन के उपरांत C3i Hub, IIT Kanpur की CEO डॉ. तनीमा हाजरा ने कार्यशाला की शुरुआत करते हुए साइबर सुरक्षा योजना के लक्ष्य एवं उद्देश्यों का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य नागरिकों और संस्थानों को डिजिटल जोखिमों से सुरक्षित करना है। यह पहल उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन धोखाधड़ी, फिशिंग, डेटा चोरी और साइबर हमलों से बचाने के लिए जागरूक करती है। योजना का लक्ष्य सुरक्षित इंटरनेट उपयोग, गोपनीयता संरक्षण और डिजिटल कौशल का विकास करना है। इसके माध्यम से युवाओं को रोजगारोन्मुखी साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। साथ ही यह योजना देश के डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर को अधिक सुरक्षित, विश्वसनीय और सक्षम बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसके बाद विशेषज्ञ वक्ता डॉ. आनंद हांडा ने आधुनिक साइबर खतरों, डिजिटल फॉरेंसिक, नेटवर्क सिक्योरिटी, पासवर्ड प्रबंधन और ऑनलाइन फ्रॉड डिटेक्शन के संदर्भ में साइबर सुरक्षा पाठ्यक्रम के आठ मॉड्यूल का विस्तृत परिचय दिया। उन्होंने इस पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी और समयानुकूल बताते हुए इसके व्यवहारिक महत्व पर प्रकाश डाला।

C3i Hub की वरिष्ठ प्रोजेक्ट मैनेजर सुश्री नेहा श्रीवास्तव ने बताया कि साइबर सुरक्षा कोर्स हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सरल व सहज वीडियो सामग्री के माध्यम से संचालित किया जाएगा। लाखों विद्यार्थियों को अब तक इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षित किया जा चुका है, जिससे विभिन्न संस्थानों में डिजिटल सुरक्षा के प्रति जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय महाविद्यालय डेवेलपमेंट काउंसिल के निदेशक प्रो. आर. के. द्विवेदी ने अपने विश्वविद्यालय में इस पाठ्यक्रम के सफल क्रियान्वयन का अनुभव साझा करते हुए कहा कि यह अत्यंत उपयोगी और रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम है। उनके अनुसार, प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों और संस्थानों को इसकी आवश्यकता समझानी होती है। कानपुर विश्वविद्यालय ने इसे अपने महाविद्यालयों में वोकेशनल कोर्स के रूप में संचालित किया है, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी न केवल साइबर अपराधों से स्वयं और अपने परिवार को सुरक्षित कर पाए हैं, बल्कि उन्होंने अपने लिये रोजगार के अवसर भी सुनिश्चित किए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि साइबर सुरक्षा पाठ्यक्रम आज के डिजिटल युग में अत्यंत अपरिहार्य है। यह विद्यार्थियों को डिजिटल जोखिमों, ऑनलाइन ठगी, आर्थिक नुकसान और साइबर धोखाधड़ी से बचने की वास्तविक क्षमता प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि साइबर सुरक्षा का ज्ञान युवाओं को मानसिक तनाव एवं डिजिटल जालों से सुरक्षित करता है और उन्हें अपने परिवार व समाज को डिजिटल खतरों से बचाने की दक्षता भी प्रदान करता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के कैरियर, रोजगार और संपूर्ण सामाजिक सुरक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी है।

इस अवसर पर आई क्यू ए सी के निदेशक प्रो. सौरव, अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. नीता यादव, तथा अधिष्ठाता विज्ञान संकाय डॉ. प्रकृति राय ने भी अपने विचार व्यक्त किए और इस पहल को समयानुकूल, आवश्यक तथा अत्यंत प्रभावी बताया।

कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से संबद्ध जनपद– सिद्धार्थनगर, बस्ती, महाराजगंज और संत कबीरनगर के जिला नोडल अधिकारी उपस्थित रहे। इनमें प्रमुख रूप से डॉ. अजय मिश्रा, डॉ. बृजेश कुमार त्रिपाठी, डॉ. अभय श्रीवास्तव, डॉ. अभय कुमार सिंह तथा ए.पी.एन. पीजी कॉलेज, बस्ती के प्रतिनिधि शामिल थे, जिन्होंने अपने विचार भी साझा किए।

कार्यक्रम के संयोजक एवं अर्थशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. संतोष कुमार सिंह तथा प्राणि विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने कार्यशाला के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिन्दी विभाग में प्रो0 बजरंग बिहारी तिवारी का व्याख्यान

शब्द को समझना एक साधना है। शब्दों के प्रकट व्यवहार से पहले प्रस्तोता को शब्दों के जिस दार्शनिक गलियारे से गुजरना होता है, वहाँ उसकी शब्द–साधना उसे दृष्टि प्रदान करती है। शब्द की साधना के क्रम में संस्कृत की परंपरा में परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी चर्चा का विशेष महत्व है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में हिन्दी के प्रख्यात कवि–आलोचक प्रो0 बजरंग बिहारी तिवारी ने उक्त बातें कहीं। वे हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित विद्वत वक्तव्य कार्यक्रम में 'शब्द, साहित्य और मनुष्य' विषय पर बोल रहे थे। प्रोफेसर तिवारी ने संस्कृत के सुप्रसिद्ध आचार्यों और उनकी कृतियों की चर्चा करते हुए समकालीन संस्कृत साहित्य की भी चर्चा की।

उन्होंने जयशंकर प्रसाद की कृति में व्यक्त पर्यावरण विषयक चिन्ता के समसामयिक महत्व की चर्चा की और कहा कि आज पर्यावरण संरक्षण हमारे लिए बड़ी चुनौती है और इसे स्वीकारना हमारी जिम्मेदारी भी है। दूषित होती पर्यावरणीय स्थितियों के कारण साहित्य और पाठक की आने वाली पीढ़ियों के मध्य संवाद होना कठिन होता जा रहा है, यह विषम स्थिति हमारे गौरवशाली मध्यकालीन साहित्य के महत्व को समझने–बताने और पढ़ने–पढ़ाने में आने वाले समय में बड़ी बाधा पैदा कर देगी।

अतिथि परिचय डॉ0 रेनू त्रिपाठी ने तथा स्वागत वक्तव्य हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ0 सत्येन्द्र कुमार दुबे ने दिया। आभार–ज्ञापन पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो0 हरीशकुमार शर्मा ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जयसिंह यादव ने किया। इस अवसर महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में प्रो0 प्रकाशचन्द्र गिरि, प्रो0 शैलेन्द्र नाथ मिश्र, डॉ0 राणा प्रताप तिवारी, डॉ0 विपिन यादव, डॉ0 राघवेन्द्र सिंह, डॉ0 विजय निषाद तथा विश्वविद्यालय के शिक्षकों में आनंद, ममता, सुजाता सहित विश्वविद्यालय के तमाम विद्यार्थी व शोधार्थी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि प्रोफेसर बजरंग बिहारी तिवारी को गौतम बुद्ध की प्रतिमा स्मृति–चिह्न के रूप में भेंट कर विभागाध्यक्ष ने पुनः पधारने के आग्रह सहित कायक्रम के विश्राम की घोषणा की।

सकारात्मक जीवनशैली का एक सशक्त केंद्र बनता विश्वविद्यालय का ओपेन जिम

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित दो अत्याधुनिक ओपन जिम, जिनका लोकार्पण विगत दिनों उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल द्वारा किया गया था, आज विश्वविद्यालय परिवार के लिए स्वास्थ्य, अनुशासन और सकारात्मक जीवनशैली का एक सशक्त केंद्र बनकर उभरे हैं। अल्प समय में ही ये ओपन जिम विद्यार्थियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रहे हैं।

वर्तमान में विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बड़ी संख्या में इन ओपन जिम में योग एवं विविध शारीरिक व्यायाम गतिविधियों में नियमित रूप से सहभागिता कर रहे हैं। विशेष रूप से आनंद छात्रावास एवं यशोधरा छात्रावास में निवास करने वाले छात्र–छात्रा इस सुविधा का सक्रिय रूप से लाभ उठा रहे हैं। इसके साथ ही विश्वविद्यालय परिसर में निवास करने वाले शिक्षकगण, कर्मचारी एवं उनके परिवारजन भी इन ओपन जिम का उपयोग कर शारीरिक स्फूर्ति एवं मानसिक ताजगी प्राप्त कर रहे हैं।

इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने अपने वक्तव्य में कहा कि योग एवं नियमित व्यायाम केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे मानसिक संतुलन, एकाग्रता, आत्म–अनुशासन और सकारात्मक दृष्टिकोण के निर्माण में भी निर्णायक भूमिका निभाते हैं। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ एवं सृजनशील मन का विकास संभव है और यही किसी भी उच्च शिक्षण संस्थान की शैक्षणिक उत्कृष्टता की वास्तविक आधारशिला होती है।

कुलपति ने आगे कहा कि विश्वविद्यालय का सतत प्रयास है कि विद्यार्थियों को ऐसा समग्र एवं संवेदनशील शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया जाए, जहाँ अकादमिक ज्ञान के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। ओपन जिम जैसी सुविधाएँ विद्यार्थियों में अनुशासन, ऊर्जा, आत्मविश्वास और सामूहिकता की भावना को सुदृढ़ करती हैं तथा तनावमुक्त एवं स्वस्थ शैक्षणिक परिवेश के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित यह ओपन जिम भारतीय स्टेट बैंक, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिसर शाखा द्वारा कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) के अंतर्गत पूर्ण रूप से वित्तपोषित है। इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने भारतीय स्टेट बैंक के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि बैंक के इस सराहनीय सहयोग से विश्वविद्यालय समुदाय को एक महत्वपूर्ण एवं दीर्घकालिक स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध हो सकी है, जो आने वाले समय में विद्यार्थियों के समग्र विकास में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में सेमेस्टर परीक्षाएं शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी ढंग से संचालित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में परिसर सहित संबद्ध 4 जनपदों के महाविद्यालयों में सेमेस्टर परीक्षाएं विगत 10 दिसंबर से सुव्यवस्थित ढंग से संचालित की जा रही हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन परीक्षाओं को पूर्णतः साफ–सुथरे, नकलविहीन एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के लिए निरंतर सक्रिय है।

कुलपति प्रो. कविता शाह के निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार एवं परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव के नेतृत्व में सम्बद्ध महाविद्यालयों के कुछ परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान केंद्राध्यक्षों एवं परीक्षा से जुड़े अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए गए कि परीक्षा किसी भी स्थिति में नकलविहीन, निष्पक्ष एवं पारदर्शी होनी चाहिए।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि साफ–सुथरी परीक्षा विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला होती है। परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थी अपनी तैयारी, क्षमता एवं परिश्रम का मूल्यांकन करता है, जिससे उसका भविष्य मार्ग प्रशस्त होता है। जिन विद्यार्थियों की तैयारी अपेक्षाकृत कम रह जाती है, उनके लिए भी निष्पक्ष परीक्षा आगे और अधिक परिश्रम व लगन से अध्ययन करने की प्रेरणा देती है। अतः परीक्षा की शुचिता प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है।

उन्होंने केंद्राध्यक्षों एवं कक्ष निरीक्षकों को निर्देशित किया कि परीक्षा के दौरान सभी आवश्यक सुविधाएं विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जाएं। परीक्षा कक्षों में पर्याप्त प्रकाश, स्वच्छ पेयजल एवं साफ–सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। ठंड को दृष्टिगत रखते हुए विद्यार्थियों से पर्याप्त ऊनी वस्त्र पहनने का आग्रह किया गया तथा डेस्क–बेंच साफ एवं व्यवस्थित रखने के स्पष्ट निर्देश दिए गए, जिससे विद्यार्थियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा सीसीटीवी मॉनिटरिंग के माध्यम से विश्वविद्यालय स्थित कंट्रोल रूम से प्रत्येक पाली की सतत निगरानी की जा रही है। साथ ही, विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा विभिन्न परीक्षा केंद्रों का भौतिक रूप से औचक निरीक्षण भी किया जा रहा है। उन्होंने कक्ष निरीक्षकों (इनविजिलेटर्स) को निर्देशित किया कि वे परीक्षा कक्ष में सतर्क रहकर अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें, अनुशासन बनाए रखें, किसी भी प्रकार की अनुचित गतिविधि पर तत्काल संज्ञान लें तथा निष्पक्ष परीक्षा संपन्न कराना सुनिश्चित करें।

उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में मौसम प्रतिकूल है, इसलिए सभी परीक्षा केंद्रों पर विशेष सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय प्रशासन विद्यार्थियों की सुविधा, सुरक्षा एवं परीक्षा की पवित्रता बनाए रखने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

भाषण एवं काव्यपाठ प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय के छात्र–छात्रा विजेता

दिनांक 22.12.2025 को भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेई जी के जन्म–शताब्दी समापन वर्ष के उपलक्ष्य में शासन द्वारा जनपद स्तर पर भाषण एवं काव्यपाठ प्रतियोगिताएं राजकीय महाविद्यालय पंचमोहनी सिद्धार्थ नगर में आयोजित हुईं। इन प्रतियोगिताओं में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के छात्र–छात्राओं ने विश्वविद्यालय का परचम लहराते हुए गौरव स्थापित किया।

भाषण प्रतियोगिता में शिवानी जायसवाल को द्वितीय स्थान, निकिता को प्रथम स्थान तथा काव्य–पाठ में अतुल कुमार उपाध्याय को तृतीय, निकिता को द्वितीय और कुशल त्रिपाठी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इस उपलब्धि से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने एक बार फिर जनपद स्तर पर अपना गौरव स्थापित किया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की शिक्षिका को "सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार"

एमिटी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के एमिटी बिजनेस स्कूल द्वारा आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के प्रबंधन अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. कहकशाँ खान को उनके उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए "सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार एमिटी बिजनेस स्कूल, एमिटी विश्वविद्यालय ग्वालियर द्वारा उनके उच्च गुणवत्ता वाले अकादमिक अनुसंधान और प्रबंधन अध्ययन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया।

इस उपलब्धि पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु की माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह ने डॉ. कहकशाँ खान को हार्दिक बधाई देते हुए उनके शोध कार्य को विश्वविद्यालय की अकादमिक प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करने वाला बताया। विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय के डीन प्रो. सौरभ ने भी उनके शोध को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बताते हुए उनकी सराहना की।

इसके अतिरिक्त, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों एवं सहकर्मियों ने भी डॉ. कहकशाँ खान को इस सम्मान के लिए शुभकामनाएँ दीं और उनके निरंतर अनुसंधान प्रयासों की प्रशंसा की। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के प्रबंधन अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. कहकशाँ खान, की यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है। यह सम्मान न केवल उनकी व्यक्तिगत अकादमिक उत्कृष्टता को दर्शाता है, बल्कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की शोध एवं शैक्षणिक उपलब्धियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी सशक्त रूप से प्रस्तुत करता है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट, अंकुस पांडे का गणतंत्र दिवस परेड के लिए हुआ चयन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के लिए यह अत्यंत गर्व का क्षण है कि विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट अंकुस पांडेय का चयन गणतंत्र दिवस 26 जनवरी की रिपब्लिक डे परेड कैंप (RDC) के लिए किया गया है। कैडेट अंकुस पांडेय सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के बी. ए. प्रथम सेमेस्टर के छात्र हैं तथा विश्वविद्यालय से एनसीसी 'C' सर्टिफिकेट में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

एनसीसी कैडेट के रूप में उन्होंने कठिन प्रशिक्षण, चयन प्रक्रिया एवं विभिन्न कैंपों को सफलतापूर्वक पूर्ण करते हुए आर.डी.सी. (पी एम रैली) की अंतिम परेड के लिए अपना स्थान सुनिश्चित किया है। उनकी यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के एन.सी.सी. इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

उल्लेखनीय है कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में वर्ष 2020 से एनसीसी की शुरुआत हुई थी। तब से विश्वविद्यालय के अनेक छात्र आर.डी.सी. के लिए प्रयासरत रहे और चयन प्रक्रिया में सम्मिलित होते रहे, किंतु कैडेट अंकुस पांडेय पहले ऐसे छात्र हैं जिनका चयन आर.डी.सी. के लिए हुआ है। इस उपलब्धि से उन्होंने विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है।

कैडेट अंकुस पांडेय के पिता का नाम स्वर्गीय वशिष्ठ पांडेय एवं माता का नाम श्रीमती गंगाजली पांडेय है। उनका स्थायी पता सुहैरनपुरवा, सुहाई कंपुरवा, जनपद सिद्धार्थनगर है।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह, कुलसचिव डॉ. अश्विनी कुमार तथा एनसीसी ए.एन.ओ. (ले.) डॉ. प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी ने कैडेट को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की एवं इसे एक विश्विद्यालय की एक विशेष उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि आने वाले समय में अन्य छात्रों को भी एनसीसी के माध्यम से राष्ट्रसेवा व सामाजिक सेवा के लिए प्रेरित करेगी।

डॉ. प्रदीप कुमार पांडेय नेपाल में सम्मानित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु (उत्तर प्रदेश, भारत) के समाजशास्त्र विभाग में सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रदीप कुमार पांडेय को नेपाल सरकार के केंद्रीय संस्थान, राजर्षि जनक विश्वविद्यालय, जनकपुरधाम द्वारा "ग्लोबल एक्सीलेंस अचीवर्स अवॉर्ड" से सम्मानित किया गया। यह अंतरराष्ट्रीय सम्मान उन्हें उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर योगदान, सुदृढ़ शोध–उन्मुख दृष्टिकोण तथा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में किए गए अकादमिक कार्यों के लिए प्रदान किया गया।

यह अंतरराष्ट्रीय सम्मान 26द्27 दिसंबर 2025 को राजर्षि जनक विश्वविद्यालय, जनकपुरधाम के रिसर्च सेंटर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के दौरान प्रदान किया गया। डॉ. पांडेय का चयन उनके शोध–आधारित अकादमिक जुड़ाव, विद्वतापूर्ण प्रकाशनों, कंसल्टेंसी प्रोजेक्ट्स में सहभागिता तथा भारत सरकार के अंतर्गत एक पेटेंट प्रकाशित कराने जैसी विशिष्ट उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए किया गया। पुरस्कार समारोह में राजर्षि जनक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमर प्रसाद यादव, रिसर्च सेंटर के प्रमुख प्रो. मनोज यादव, विदेशी भाषा केंद्र के प्रमुख डॉ. विनोद शाह, विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री सत्य नारायण शाह सहित भारत एवं विदेशों से आए अनेक शिक्षाविद्, शोधकर्ता और विद्वान–गण उपस्थित रहे।

इस अंतरराष्ट्रीय सम्मान के पश्चात सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु की कुलपति माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि यह हमारे विश्वविद्यालय के लिए गौरव का क्षण है। प्रोफेसर शाह ने डॉ. प्रदीप कुमार पांडे को इस विशेष उपलब्धि पर बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। साथ ही सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलसचिव, परीक्षा नियंत्रक, कला संकाय की डीन प्रो. नीता यादव, विभिन्न संकायाध्यक्षों, विश्वविद्यालय के शिक्षकों प्रो. हरीश कुमार शर्मा, प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे, डॉ सच्चिदानंद चौबे, डॉ. अखिलेश दीक्षित, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, डॉ. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. मनीषा बाजपेयी, डॉ यशवंत यादव डॉ हृदयकांत पांडेय, डॉक्टर रविकांत शुक्ला, डॉ विशाल गुप्ता सहित अन्य प्राध्यापकगण ने भी डॉ. पांडेय को बधाई दी तथा इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए इसे विश्वविद्यालय के लिए गौरवपूर्ण क्षण बताया।

प्रबन्धन अध्ययन विभाग फ्रेशटोपिया–अरुणोदय समारोह

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्त के प्रबन्धन अध्ययन विभाग के छात्रों द्वारा 12 दिसंबर 2025 को फ्रेशटोपिया–अरुणोदय समारोह का आयोजन किया गया। यह समारोह छात्रों द्वारा नवागंतुक छात्रों के भव्य स्वागत एवं विश्वविद्यालय में विभिन्न आयामों से उनके परिचय को स्थापित करता है। इस कार्यक्रम का आयोजन विभाग द्वारा प्रतिवर्ष किया जाता है और इसमें नव–प्रवेशित छात्रों को मौजूदा छात्रों द्वारा समभाव से विभाग की कार्यसंस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्यों से उनका अनुकूलन कराया जाता है। इस वर्ष यह कार्यक्रम अरुणोदय की थीम पर प्रबन्ध अध्ययन विभाग के एम. बी. ए. द्वितीय वर्ष के छात्र–छात्राओं द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीय कुलपति प्रोफेसर कविता शाह द्वारा दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया। कुलपति महोदया ने छात्रों के आयोजन के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से छात्रों में विचारों की एकता आती है, साथ ही एकजुट होकर सामंजस्यपूर्वक कार्य करने की कुशलता प्राप्त होती है। मौजूदा छात्रों के द्वारा नवागंतुक छात्रों के इस सामंजस्यपूर्ण स्वागत कार्यक्रम से संस्थान की कार्य संस्कृति को समझने पर बल प्राप्त होता है। उन्होंने सभी छात्रों एवं शिक्षकों को कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु एवं इसको प्रबन्धन तथा विधि विभाग के छात्रों के साथ सम्मिलित करने पर हार्दिक बधाई दी। कार्यक्रम में लॉ फैकल्टी के शिक्षक एवं छात्रों ने भी

उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे आयोजन और अधिक जीवंत और रोचक बन गया।

विभागाध्यक्ष प्रो. सौरभ ने नवागंतुक छात्रों का हर्षपूर्वक स्वागत किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो० नीता यादव ने छात्रों के कुशल नेतृत्व की सराहना की और कहा कि प्रबन्ध अध्ययन विभाग के छात्र–छात्राओं के अनुशासनात्मक सामंजस्य एवं स्वायत्तता से विश्वविद्यालय की कार्य संस्कृति में बढ़ोत्तरी होती है। विदित हो कि छात्र–छात्राओं के सम्मिलित प्रयास से कार्यक्रमों को आर्थिक रूप से स्वायत्त होने के प्रशिक्षण के अंतर्गत पूर्ण कार्यक्रम एक्सिस बैंक, नौगढ़, एस पी ऑटोमोबाइल, सिद्धार्थ नगर, एन पी ए वि नेट प्रोटेक्टर–साइबर सिक्यूरिटी, एस डी सी कंस्ट्रक्शन कतर, दिल्ली चाट कोर्नर नौगढ़, सूर्यांश वस्त्रालय, तथा पाठक फिल्म एवं वेडिंग स्टूडियो द्वारा प्रायोजित किया गया था।

विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो. दीपक बाबू ने भी छात्रों को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। कार्यक्रम में नृत्य, गायन, परिधान परेड और अन्य कई सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर अपनी प्रतिभा से उल्लेखनीय प्रदर्शन के आधार पर श्री नवागंतुक छात्र की उपाधि से श्री वतन मौर्य एवं सुश्री नावागंतुक छात्रा की उपाधि से सुश्री साक्षी मौर्य (एम बी ए प्रथम वर्ष) को सुसज्जित किया गया।

कार्यक्रम का सकुशल संयोजन डॉ० दीपक जायसवाल, डॉ० कहकशाँ खान, श्री अलोक पांडेय, सुश्री श्रेस्ठा श्रीवास्तव और सुश्री प्राची जायसवाल के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बी. बी. ए. विभाग के आध्यक्ष डॉ. अखिलेश दीक्षित, डॉ. विमल चंद्र वर्मा, डॉ. नीरज सिंह के साथ–साथ अन्य ने अपनी उपस्थिति से छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहन प्रदान किया। अंत में ऊर्जा से भरपूर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और संगीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ, जहाँ छात्रों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के द्वारा नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय के जीवन एवं कार्य संस्कृति की एक सुनहरी और प्रेरणादायी शुरुआत प्राप्त हुई।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की हरित ऊर्जा के क्षेत्र में बड़ी खोज

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मण सिंह एवं शोध टीम कोर उद्योग अनुसंधान संस्थान, दक्षिण कोरिया के साथ हरित ऊर्जा (ग्रीन एनर्जी) के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। वैज्ञानिकों ने हाइड्रोजन फ्यूल सेल और सुपर कैपेसिटर के लिए एक पर्यावरण–अनुकूल, कम लागत वाला और अत्यधिक प्रभावी नया पदार्थ विकसित किया है, जो भविष्य की ऊर्जा तकनीकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह शोध प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय जर्नल Journal of the American Ceramic Society, Q1, "kh" kZ JCR जर्नल में प्रकाशित हुआ है, जो सिरेमिक श्रेणी विज्ञान के क्षेत्र की विश्व–स्तरीय पत्रिका मानी जाती है। डॉ. सिंह और उनकी टीम ने स्ट्रॉन्शियम–डोप्डलैंथेनमनिक लैट पेरोव्स्काइट नामक एक उन्नत पदार्थ का निर्माण किया है, जिसे वन–पॉट इंस्टेंट फ्लेम सिंथेसिस नामक नवीन विधि से तैयार किया गया। यह विधि पारंपरिक जटिल प्रक्रियाओं की तुलना में तेज, सस्ती और ऊर्जा–सक्षम है, जिससे पर्यावरण पर भी कम प्रभाव पड़ता है। परीक्षणों में यह नया पदार्थ हाइड्रोजन फ्यूल सेल में ऑक्सीजन रिडक्शन रिएक्शन के लिए उत्कृष्ट उत्प्रेरक (कैटेलिस्ट) सिद्ध हुआ है। साथ ही, सुपर कैपेसिटर के रूप में प्रयोग करने पर इसमें लंबे समय तक उच्च स्थिरता और ऊर्जा संग्रहण क्षमता देखी गई।

डॉ. लक्ष्मण सिंह ने बताया कि यह खोज महंगे प्लेटिनम– आधारित उत्प्रेरकों का सस्ता और टिकाऊ विकल्प प्रदान कर सकती है। इससे न केवल स्वच्छ ऊर्जा तकनीकों की लागत घटेगी, बल्कि भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में भी मजबूती मिलेगी। विशेषज्ञों के अनुसार, यह शोध इलेक्ट्रिक वाहनों, नवीकरणीय ऊर्जा भंडारण और हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह जी ने भी उन्हें बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में ज्ञान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थान है। हमारे शिक्षक शोधकर्ता जटिल चुनौतियों का समाधान करने और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह उपलब्धि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की अत्याधुनिक अनुसंधान और नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिससे इस क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान के रूप में इसकी प्रतिष्ठा और मजबूत होती। विज्ञान संकाय के डीन प्रोफेसर प्रकृति राय ने भी उन्हें इस उपलब्धि पर बधाई दी।

हिन्दी की वृहत्तर भूमिका को रेखांकित करती पुस्तक

(पुस्तक समीक्षा) —डॉ. जयसिंह यादव

'देश की हिन्दी' सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आचार्य तथा पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय एवं छात्र–कल्याण प्रो. हरीशकुमार शर्मा की पुस्तक है जिसमें व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की भूमिका पर विचार किया गया है। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी तथा सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के पूर्व कुलपति तथा वर्तमान में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे को समर्पित 158 पृष्ठ की इस पुस्तक में कुल बारह लेख सम्मिलित हैं। प्रायः ये सभी लेख हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं, जिनका सन्दर्भ के लिये लेखक ने उल्लेख भी कर दिया है।

लेखक ने महात्मा गांधी, रामविलास शर्मा, डॉ. श्यामसुन्दर दास, डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय जैसे हिन्दी हितैषियों पर लेख लिखकर उनके योगदान को इस पुस्तक में रेखांकित किया है तो वहीं पूर्वोत्तर स्थित भारत के सीमांत प्रान्त अरुणाचल प्रदेश के दो रचनाकारों जमुना बीनी तादर तथा तारो सिन्दिक के काव्यावदान से भी अवगत कराने का कार्य किया है। वस्तुतः लेखक लम्बे समय तक अरुणाचल में रहे हैं, जिसके कारण उनका अरुणाचल सम्बन्धी ज्ञान पुस्तकीय आधार पर नहीं, प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित है। पुस्तक में लेखक का वहाँ की रचनाधर्मिता एवं जनजीवन से जुड़ाव एवं लगाव स्पष्ट झलकता है। पुस्तक के कई लेख अरुणाचल प्रदेश से ही सम्बन्धित हैं। यह बात इस पुस्तक को और भी विशेष बनाती है। पुस्तक में 'अरुणाचल की हिन्दी' शीर्षक से लिखा गया निबन्ध काफी महत्त्वपूर्ण है, जो बड़े रोचक ढँग से अरुणाचल प्रदेश में प्रचलित हिन्दी के वैशिष्ट्य को उजागर करता है। इस लेख में लेखक ने लिखा है– 'यहाँ जनसामान्य की हिन्दी का अपना एक अलग अन्दाज है; जिसके कारण आप उसे बम्बइया हिन्दी, मद्रासी हिन्दी, कलकतिया हिन्दी आदि की तरह अरुणाचली हिन्दी कह सकते हैं। यह अन्दाज यहाँ की खूबसूरती है, भारत के वैविध्यपरक स्वरूप की खूबसूरती है और हिन्दी भाषा की क्षमताओं एवं विशिष्टताओं की खूबसूरती है।..'

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, पुस्तक की एक और विशेष बात यह कि इसमें लेखक ने हिन्दी को मात्र हिन्दी क्षेत्र तक सीमित करके नहीं देखा है, अपितु समूचे देश की प्रतिनिधि भाषा के रूप में उसकी भूमिका पर विचार किया है। 'कुछ कहना है' (प्रस्तावना) में उन्होंने लिखा भी है कि 'हिन्दी दरअसल एक भाषा भर का नाम नहीं है; अपितु यह एक संस्कृति का नाम है, जिसकी प्रकृति सर्वसमावेशी है और भूमिका समन्वयकारी है।...' वे इस पुस्तक में 'हिन्दी दिवस' को 'भारतीय भाषा दिवस' के रूप में मनाने पर जोर देते हैं और व्यापक अर्थ में हिन्दी को राष्ट्रीयता का जीवन्त प्रतीक मानकर उसके दायित्व को देवऋण की भाँति मानते हैं। हिन्दी एवं प्रान्तीय भाषाओं के मध्य यदा–कदा पैदा किये जाने टकराव को वे अकारण मानते हैं। उनके अनुसार भारत की अन्य प्रान्तीय भाषाओं को खतरा हिन्दी से नहीं, बल्कि सभी को अंग्रेजी से खतरा है। 'हिन्दी दिवस या हिन्दी बस' लेख के अन्त में वे लिखते हैं– 'अतः राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिये प्रयास करना, प्रान्तीय स्तर पर कहीं अपनी भाषाओं की मजबूती के लिये भी प्रयास करना है। यह अंग्रेजी और अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की, भारतीयता की साझा लड़ाई है।' पुस्तक में एक लेख 'भारतीय भाषा चिन्तन : बरास्ता हिन्दी' भी सम्मिलित है। इस लेख में लेखक ने तमाम भारतीय भाषाओं एवं बोलियों से सन्दर्भ प्रस्तुत कर भारतीय भाषा एवं साहित्य की एकता पर प्रकाश डाला है।

कुल मिलाकर यह एक पठनीय एवं मननीय पुस्तक है, जो भारतीय भाषाओं एवं हिन्दी के बीच के सम्बन्ध को समझने तथा उनमें परस्पर एकत्व भाव को विस्तार देने के लिये एक दृष्टि देती प्रतीत होती है। भाषा एवं साहित्य के अध्येताओं तथा हिन्दी–प्रेमियों के साथ उन लोगों को तो यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिए जो गाहे–बगाहे हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के बीच में वैमनस्य पैदा करने की कोशिश करते हैं।

(पुस्तक : देश की हिन्दी; लेखक : हरीशकुमार शर्मा; प्रकाशक : जिज्ञासा प्रकाशन, गाजियाबाद; प्रथम संस्करण (पेपरबैक): 2024; मूल्य : 200 रु.;)

(सहायक आचार्य–हिन्दी विभाग)